गोकुल भवन

(श्री कृष्ण लीला)

(सब एक्टरों का श्री नेमनाथ भगवान की स्तुति करते नज़र आना)

गाना—तर्ज–चौवीसो महाराज थारे चरणों में नयावें ॥ चौवीसो महाराज ॥

पूरो पूरो आस हमारी श्री नेम नाथ महाराज ।
श्री नेम नाथ महाराज, श्री नेमनाथ महाराज ॥ पूरो पूरो० ॥
श्रीमती राजुल व्याहने आये, पशुवन के बंधन तुड़वाये ।
करुणा उपजी वन को धाये, लिया मुक्ति वधू का राज ॥ पूरो०
सुर सुरगों से देखन आया, देख पराक्रम अति घबराया ।
मान भंग हुआ शीस नवाया, रखो रक्खो हमारी लाज॥ पूरो०॥
यादव वंशी कृष्ण कन्हैया, कौरव पांडव पांचो भैय्या ।
ज्ञान "मूल" हो धर्म धारैया, जगे हृदय में आज। पूरो०पूरो०

(प्रस्थान)

प्रथम परीच्छेद (प्रथम दृष्य)

❀ जरासिंध अर्धचक्री का दर्बार ❀

(जरासिंध का बैठे दिखाई देना वसुदेव व कंश का आना)

(रामेसगरियों का गा नाच कर दर्बार की इज्जत अफ़ज़ाई करना)

गाना

करिये कृपा हे प्रभू हम पर पल छिन निश दिन आप है ।
छ छ छूम छ छ छूम छन न न न न न न ।
दारेना दारेन तूम तन न न न न न न ॥
कृधान कृधान किट तक धा धा धा ।
हरी भरी सुर भर गावो ताल से । सारे गा । मा पा धानी सा है ।
करिये कृपा हे प्रभू हम पर पल छिन निश दिन आप है ॥

कंश—श्री महाराजा की विजय हुई ।

जरासिंध—क्या शत्रू पर अपना अधिकार हुवा ?

कंश—जी हां शत्रू बंदी गृह में बन्द हुआ ।

जरासिंध—कौन महान पुरुष है जिसकी शूर वीरता प्रशंसा योग्य है ?

कंश—श्री महाराज ! हमारे गुरू जो सन्मुख खड़े हैं । यह इनही के चरणों का प्रशाद है ।

वसुदेवजी—नहीं नहीं शत्रू को आपने ही माया मई सिंघो का रथ बना कर शक्ती हीन किया है ।

कंश—अवश्य ऐसा हुवा । परन्तु वह आप कीही सम्मती से इसलिये गुरू जी यह कार्य्य आप काही है । और आपही चक्रवर्ती की कन्या प्रण लेने के अधिकारी हैं ।

(सभासदों की तरफ़ देख कर)

वसुदेव—(मन में—हा मैंने मुनी के मुखारविन्द से सुना है कि चक्रवर्ती की कन्या का पती अल्प आयू होगा ।

नहीं हरगिज नहीं शत्रू को बंदीगृह में बन्द करना आपकाही करतव्य था । इस लिये आपही चक्रवर्ती से इनाम पाने के मुस्तहक़ हैं ।

कंश—गुरू महाराज ऐसा न विचारिये सोच समझ कर बचन उचारिये क्योंकि महाराज की कृपा से आप को बहुत दौलत हाथ आयेगी

वसुदेव—ह हैं दौलत कितने रोज काम आयेगी जब तक कि शुभ कर्म उदय है पास रहेगी अंत को अशुभ समय येही दौलत शत्रू होजायगी इस लिये अय राजन मुझको माफ कीजिये।

कंश—धन्य है धन्य है गुरू महाराज आपके विचारों को धन्य है तृष्णा रहित नृलोभी शूर वीरों में शूर वीर क्षत्रियों में क्षत्र धारी आप को पाया परन्तु यह समझ में नहीं आया कि इस का बदला मैं आपको क्या दूं। शेर

सत्य दिल से जानलो, यह मण हमरा हो चुका।
तुम हमारे हो चुके, और मैं तुम्हारा हो चुका॥

कंश—दिल जिगर है आप का यह जिन्दगी कुरबान है।
मांगलो देता वचन हूं दिल में जो अरमान है॥

वसुदेव—शेर–चाहता मुझ को नहीं कुछ, क्या बड़ा यह काम है।
सेवा इस तन से हुई, वह आप काही नाम है॥

कंश—हा! ऐसी भव्यआत्मा मेरी नजर से नहीं गुजरी। परन्तु करूं तो क्या करूं। ऐसे शूरवीर को क्या इनाम दूं। खैर देखा जायगा

विदूषक—देने के नाम देखा जायगा देखिये क्या होता है।

जरासिंध—क्या है।

कंश—शत्रू को अवश्य मुझ सेवक ने ही गिरफ्तार किया है।

विदूषक—शाबाश! शाबाश! सत्य भी हो तो ऐसाही हो।

शेर—चक्रवर्ती की सभा में जाके बोलें झूठ हम।
कोतवाल जब यार यारो फिर कहो अब किसका ग़म।

जरासिंध—आपने।

कंश—जी हां इस दास ने।

जरासिंध—परन्तु मुझको शोक है। कि ऐसा शूरवीर क्षत्र धारी कंश एक कलाली के घर कैसे पैदा हुआ।

कंश—(ताअज्जुब से) क्या आप मुझको कलाल समझते हैं।

विदूषक—वाह वाह एक नाशुद दो शुद

कंश-शेर—है क्षत्री वंश जोश रंगों में भरा हुआ।
खो दूंगा जान भस्म हो तन यह खड़ा हुवा॥

(तलवार निकाल कर)

क्षत्री हूं या कलाल हूं कह देगी यह कटार।
गर कुछ फ़रक मुझ में हुवा करलूं जिगर से पार॥

(हाथ जोड़ कर)

साबित करो कलाल अब करना ज़रा मुवाफ़।
जो कुछ हो दिल में आपके कह दीजे साफ़ २॥

जरासिंघ-शेर-आयू थी आठ साल की कलाल से लिया।
भाक्रम तेरे देख सेना पद का पद दिया॥
देखो हम अभी मंदोदरी कलाली को बुलाते हैं।
कोतवाल शहर!

कोतवाल—श्री महाराज—(सर झुकाता है)

जरासिंघ—देखो तुम शीघ्र जाओ कोशाम्बी नग्री से मंदोदरी कलाली को लाओ।

कोतवाल—श्री महाराज अभी बुला कर लाया।

(जाता है कुछ समय में लेकर आता है)

कलाली—जै हो! जै हो!! अन्न दाता की जै हो!!!

कवित्त—प्रजा के पालक हो तीन खंड मालक हो।
शूर वीर क्षत्री चहूं ओर जीत लिया है॥
तीन लोक तीन काल स्वामी भये भूपाल।
चरणों में देवों ने शीस आन दिया है॥
दरिद्री जे कर्म हीन चरणों में आन गिरे।
पैर की रज धूल घोल सुधा सिंधु पिया है॥
तन मन धन मेरा यह आपका है स्वामी नाथ।
रक्षक भपाल मुझे कैसे याद किया है॥

जरासिंध गाना

बहादुर शस्त्र धारी कंश कलालों में हुवा कैसे।
सता सत कहदो तुम हमसे हुवा हो मामला जैसे॥
मेरे मन को है ये भाया, पकड़ शत्रू को है लाया।
निडर होकर डटे रणमें, नहीं क्षत्री लड़ें ऐसे॥ बहादुर०

कलाली का गाना

तर्ज—दिन चढ़ा सवा पहर घड़ी चली जमना कू।
सुनो सुनो जी महाराज कहूं मैं मनकी, कहूं मैं मन की।
नहीं कंश पुत्र से चाह हमें कछु धनकी, सुनो सुनो०॥
जमना में वहता हुवा मंभूखा आया, मंभूखा आया।
एक बालक उसमें रोता हसता पाया,॥ सुनो सुनो० २॥
दिया पुत्र विधाता समझ बाल को पाला॥ बाल को पाला०॥
एक पत्र मिला उस समय खोलते ताला॥ सुनो सुनो०॥
गर हुक्म होय तो अभी मंभूखा लाऊं, मंभूखा लाऊं।
घर पर रक्खा है प्रभू अभी मैं जाऊं॥ सुनो सुनो०॥

जरासिंध-शेर—बहुत शीघ्रता से अभी जाओ तुम।
मंभूखा जो निकला है ले आओ तुम॥

कलाली—श्री महाराज अभी लाती हूं।

(जाना कुछ समय में लेकर आना)

द्वारपाल—जी महाराज मंदोदरी मंभूखा लेकर हाजिर होती है।

जरासिंध—हाजिर करो।

कलाली का मंभूखा लेकर आना पत्र निकाल कर देना

मंदोदरी—श्री महाराज। पत्र लीजिये पढ़कर देखिये। इसकी मां मैं नहीं हूं और न मैं गुण तथा औगुण की जुम्मेदार हूं। यह कंश बचपन से ही उद्धत था बहुत कुछ बरजूं थी परन्तु यह

नहीं मानता था एक समय इसने एक सेठ के लड़के को मारा मैने अपयश होने के कारण अपने मकान से निकाल दिया श्री महाराज तब से हमने इसको आज ही देखा है। इस लिये श्री महाराज मैं क्षमा चाहती हूं।

मंत्री—लाओ २ महाराज को पढ़कर सुनायें।

(मंदोदरी का चिट्ठी देना)

जरासिन्ध—सुनावो क्या लिक्खा है

मंत्री—श्री महाराज सुनिये। महराज उग्रसेन मथुरा वासी की मोहर लगी है। और पत्र में लिखा है कि राजा उग्रसेन ने पुत्र की दुष्ट चेष्टा देखकर जमना में बहाने का हुक्म दिया है। इसलिये यह दुष्ट पुत्र जमना में बहाया गयाहै।

(कंश यह सुनकर पिता से परोक्ष अवस्था में क्रोध करता है)

कंश—पिता। पिता। ओ पापी पिता अन्याई पिता। मुझ निरपराध बालक को तूने कैसे अपराधी समझा। क्या समझ कर मेरी अरथी जमना में बहाई। बस,बस, इस पुत्र ने भी आज सौगन्ध खाई जब तक तुझ को मंझूखे रूपी पिंजड़े में न लटकाऊंगा अन्न जल न पाऊंगा।

जरासिन्ध—शूर वीर कंश अवश्य तू क्षत्री है।

कंश—श्री महाराज यह सत्य है। परन्तु इस समय जो मेरा अपमान है वह मेरी मृत्यु के कष्ट से महान है।

जरासिन्ध—पुत्री जीवन दशा आओ।

पुत्री का नीचे देख कर शरमिन्दा होकर आना

(जरासिन्ध का पुत्री जीवनदशा का हाथ पकड़ कर कंश के हाथ में देना)

जरासिन्ध—अय कंश हाथ बढ़ावो जबतक कि चांद सूरज की चमक दुनिया में मौजूद है खुश खुर्मरहो। अय रामशगरियो गाओ गावो मुबारिक बादी सुनावो।

रामशगरियों का गाना और रुपट्टे कांधे पर डाल कर ठुमका लगाना

गाना

लज-गुलदूं पे जुल्फों ने बांदी कटार, प्यारे महबूबा गुलनार दी
वई तोबा तोबा ॥

(नाच कर ठुमका लगा कर)

खुशियां मनावो, मन हरसावो । प्राण प्यारी, तारों में चन्दा जैसा साजना
हम जायें वारी । खुशियां मनावो, दिल वहलावो० ॥ ध० ॥

शेर—भानु चेहरे को लख शरमिन्दा हो आसमान चला ।
सदायें शरम हुई भाग चला भाग चला ॥
नोशा तुम्हारे चेहरे की तारीफ क्या करें ।
शमशोकमर तो दागी हैं सनमुखही क्या धरें ॥
जायें वलहारियां । दिलवर प्यारियां ।
होय मुवारिक दूल्हा । दुल्हन पे हम जायें वारी । खुशियां० ॥

प्रथम परिच्छेद (द्वतिय दृष्य)

❀ उग्रसैन का दर्बार ❀

द्वारपाल—श्रीमहाराज सावधान ! सावधान ! नग्री में शत्रू का प्रवेश है परजा चारोंओर भय भीत है कुछ समय में दरबार में आया चाहता है ।

उग्रसेन—हैं हैं शत्रू कौन शत्रू (ताज्जुब से खड़े होना)

आवाज़—(बन्दूक की आवाज का आना) मार लिया मारलिया ।

उग्रसेन—बहादुरो संग्राम के लिये तैयार होजावो ।

(कंश का बन्दूक की फैर करते हुवे आना)

कंश—ओ पापी देख मैं कौन हूं ॥ शेर ॥

कौन तू है कौन मैं हूं देखले अब आंख से।
पुत्र की शमसीर होगी पार तेरी नाक से ॥
निरपराधी बालका को क्यों बहाया जान कर।
देख वही बालका मारेगा शस्तर तान कर ॥

उग्रसेन—शेर किसका बालक कैसा बालक दूर हो जा दूरहो।
मार खायेगा यहां पर हड्डी चकना चूर हो ॥

वार्ता—बहादुरो पकड़ो पकड़ो।

(पकड़ने को आना और सबका हार मान कर जाना)

उग्रसेन—सेनापती क्या खड़े देख रहेहो संग्राम के लिये तैयार होजाओ

(सेनापती बिगुल बजाता है फौज आती है।)

सेना उग्रसेन—घेरो घेरो शत्रू को चारों ओर से घेरो।

कन्श—बिगल बजाता है दूसरी ओर से कंश की फौज आती है।

सेना कन्श—(उग्रसेन की सेना को रोकती है) खबरदार

शेर=हाथ में तलवार जब तक कल्ब में यह जान है।
शूर वीरो क्षत्रियों की कंश पर कुरबान है ॥

कन्श की सैना व उग्रसेन की सैना को घोर संग्राम में अन्तको उग्रसेन की सेना का भागना कन्श का राजा उग्रसेन को पकड़ लेना

कन्श—(राजा का हाथ झटक कर) आ! आ! पापी निरलज्ज, मौत का मजा पा।

उग्रसेन—क्यों बक रहा है ले मेरी तलवार खा।

(दोनों का लड़ना अन्त को राजा उग्रसेन का गिरना)

कन्श----(छाती पर चढ़कर) पापी पिता निरलज्ज पिता अन्याई पिता ले मेरा खंजर।

(मारना चाहना-रानी का आना)

रानी उग्रसेन---छमा छमा छमा बेटा मात पित पर छमा।

कन्श बेरहमी से धक्का देता है

कन्श----दूर हो चांडालनी जिस समय मुझको अर्थी में बन्द करके जमना में बहाया था चांडालनी तू कहां थी।

(माता का घुटने मोड़कर हाथ जोड़ना)

माता----अवश्य बेटा हम दोषी हैं परन्तु इस समय हम पर रहम! रहम!! रहम!!!.........

(कन्श बेरहमी से धक्कादेता है रानी गिरपड़ती है)

कन्श---रहम! कैसा रहम किसका रहम!!

शेर—रहम होगा देव में दीवार में मुझ में नहीं।
रहम होगा कोह में कोह सार में मुझ में नहीं॥
रहम होगा तेग में तलवार में मुझ में नहीं।
रहम होगा गैर में अग्यार में मुझ में नहीं॥

(सेनापती सुनो)

सेनापती----(सर झुका कर) जो आज्ञा।

कंश—शेर—कैदकर दोनों को लटकाओ सरे दरबारमें।
मात पित को देख कर इबरत होवे संसार में॥

सेनापति—बहुत अच्छा श्रीमहाराज।

उग्रसेन व रानी को हिरासत में लेना

(सबका प्रस्थान)

अति मुक्त का आना लघु पुत्र उग्रसेन

अतिमुक्त-धिक्कार ! धिक्कार ! धिक्कार ! एसे अन्याई पुत्र पिता दोनों को धिक्कार सांसारिक जीवन का विषय भोग में लिप्त होकर सुख मानना भूल है। भूल है। सरासर भूल है।

गाना--तर्ज लावनी

भोगाभोग करें हैं निश दिन अन्त कहे ये भूल हुई।
तृष्णा लोभ मोह में फंसकर जीवन दशा कबूल हुई ॥
पिता कहे मम पुत्र होय और पुत्र रखें बन्दी खाने।
तन धन लछमी कारन आतम चले पुत्रको मरवाने ॥
इष्ट वस्तु का हुवा विछोहा तो मन कुछ वैराग हुवा।
आरत रौद्र ध्यान का मिलकर आतम पर स्वराज्य ॥ हुआ ॥
कर्म रूप परवत को भेदूं दिल में येही ध्यान हुआ।
बन में जाकर करूं तपस्या आतम रूपी ज्ञान हुआ ॥

वार्ता—बस दिल में यही अरमान है। जिन दिक्षा लेने का ध्यान है

(प्रस्थान)

प्रथम परिछेद (तृतिय दृश्य)

(कंश का दरबार)

(राजा उग्रसेन तथा रानी का पिंजड़े में लटके दिखलाई देना)

सेना पति—शेर-राजा रानी कैद में हैं छुट गया घर वार है।
मथुरा के राजा हुवे ये कंश का (सब) दरबार है ॥

द्वारपाल—सावधान श्री महाराज आते हैं।

(कंश का आना सब दरबारियों का सर झुकाना)

राम शगरियां—कैसा मुख पर चमके दमके तुमरे ताज शाहाना।
ताज शाहाना मभू ताज शाहाना ॥ कैसा० ॥

शेर—भर भर पिलादे साकिया, आबे हयात को।
हो लुत्फ जिंदगी का हसद आफताब को॥
सत प्रेम कटोरा भर ने को अब हाथ बढ़ाना। कैसा०

शेर—दुनिया सराय पेश है अशरत का फूल है,
नफरत जो लोग करते हैं यह उनकी भूल है॥
उन लोगों के बहकाने में शाहाना न आना। कैसा ०।

द्वारपाल—श्री महाराज गुरू वसुदेव जी आरहे हैं।

कंश—जावो गुरू महाराज को बाइज्जत ले आवो। (गुरूजी का प्रवेश)

कंश—(सिंहासन से उठकर) गुरू महाराज को प्रणाम।

वसुदेव—जयहो। जयहो। राजन तेरी विजय हो।

कंश—आइये। आइये। सिंहासन पर विराजिये।

वसुदेव—सिंहासन पर आपही तिष्ठिये। विराजिये। आप को ही मुबारिक हो (गुरू का यथा योग्य बैठना)।

कंश—(कुछ देर में सोचकर) गुरू महाराज खूब याद आया।

शेर—आप का अहसान जो मुझपर है सर पर भार है।
जब तलक बदला न दूं मैं यही दिल में खार है॥
सेवा में दी देवकी को येही सोचा आज है।
करलो बस मंजूर कहना रक्खो मेरी लाज है॥

वार्ता—गुरू महाराज बहन देवकी को सेवा में देताहूं। कबूल करके मुझ को कृतार्थ कीजिये। (वसुदेवजी मौन धारण करते हैं)

कंश—(देवकी से)

बहन देवकी तुम्हारा पानी ग्रहण राजा वसुदेव जी से करताहू. गुरू वसुदेव जी हाथ बढ़ावो।

(देवकी का हाथ पकड़ कर वसुदेव के हाथ में देना दोनों का पानीग्रहण)

(अथ रामशगरियां गावो २ शादी की खुशी मनावो)

रामशगरियों—गाना-तर्ज०—लागी सीने में प्रेम कटारी० ।

दूल्हा दुल्हन पे जायें सखी वारी, होवें सूरत मुबारिक प्यारी प्यारी।
कुंवर दुलारी, बाग बहारी-गावो गावोमुबारिक वारी वारी। दूल्हा०
हम हैं भिखारी, तुम हो मुरारी-तारो दीनन को त्रिपुरारी। दूल्हा०
मुबारिक सुनाओ, ईनाम पावो-गावो मंगल मिलजुल सारी। दूल्हा०

प्रथम परिच्छेद (चतुर्थ दृश्य)

(कंश का महल)

(कंश का बैठे दिखाई देना)

रानी कंश—लुट गई लुट गई स्वामी लुटगई।

कंश—(आश्चर्य से) हाय यह क्या।

रानी—गाना तर्ज जोगिया

हाय यह क्या आफत आई, मुनी अन्यथा वचन सुनाई।
बिन सोचे तुमने क्यों स्वामी, वहन देवकी ब्याही ॥
जानेका तुमरे पुत्र हो शत्रू, दीना यह बतलाई॥ हाय यह० ॥
मेरे पिता कामी जानी शत्रू, करदे राज तबाही।
पूछा न तुमने हाय किसी से, मनमें यह क्या समाई॥ हाय०
बचन असत्य न भाखें मुनिवर, प्राण लो अपने बचाई।
मुझ को सहारा प्राण पतीका, हाय दुहाई, दुहाई॥ हाय०

वार्ता—प्राण नाथ आज ग्रहस्त आश्रम में अति मुक्तक मुनी अहार को पधारे उन्हों ने अनुचित बचन उचारे कहा कि हे पुत्री देवकी के जो पुत्र होगा वह तेरे पति और पिता का जानी शत्रू होगा श्री महाराज बचाओ बचाओ मुझ अभागनी को इस आफत से बचावो

कन्श—प्रिये संतोष रख ईश्वर तेरी मदद करेगा।

कन्श—हा। शेर-गुलिस्ताने जहां को ऐश से गुलजार मैं समझा।
वफाये बू थी जिस गुल में वनी वह खार मैं समझा।

वार्ता--बस प्यारी मैं अभी किसी निमित्त ज्ञानी को बुलाता हूं आप जाइये आराम कीजिये (रानी का जाना)

कंश—अरे कोई है।

द्वारपाल—श्री महाराज क्या आज्ञा है।

कंश—देखो तुम किसी निमित्त ज्ञानी को बुलाकर लाओ।

द्वारपाल—श्री महाराज अभी बुलाकर लाता हूं (जाता है)

कंश—हाय करूं तो क्या करूं कुछ समझ में नहीं आता।

शेर—देवकी को मारदूं या मारदूं वसुदेवको। (परन्तु)
ऐसा करने से कलंकित करना है स्वयमेव को।

द्वारपाल---श्री महाराज निमित्त ज्ञानी आते हैं।

(निमित्त ज्ञानी का प्रवेश)

कंश—महाराज के चरणों को नमशकार।

निमित्तज्ञानी—आनन्द रहो। कुशल रहो कहिये महाराज मुझे कैसे याद किया।

कंश—श्री महाराज गुरू वसुदेव को क्षत्री शूरवीर जान कर बहन देवकी का उनसे पाणी ग्रहण किया परन्तु खेद है कि अकसमात अतिमुक्तक मुनि आहार को मेरे घर पधारे उन्होंने अनुचित वचन उचारे।

शेर—तू खंडी देवकी के पुत्र मरा अभिमान का होगा।
कंश फिर कंश सुन ? शत्रू वह तेरी जान का होगा॥

वार्ता—कहिये महाराज क्या यह वचन सत्य हैं।

निमित्तज्ञानी—(कुछ सोचकर) (उंगलियों पर गिन गिनाकर) अवश्य मुनी के वचन सत्य हैं।

कंश—(चौंक कर) क्या वह मेरी जान का शत्रू होगा।

निमित्त०—अवश्य ऐसा ही होगा।

(निमित्तज्ञानी का जाना कंश का रोकना)

कंश—और सुनो तो वह कैसा बलवान होगा।

निमित्त०--तेरा अभिमान भंग करने वाला होगा।

(निमित्तज्ञानी का जाना कंश का पल्ला पकड़ना)

कंश—श्री महाराज सुनो तो सुनो तो।

निमित्त०—बस राजन अब सन्ध्या का समय है। इसलिये हम जाते हैं।

(चले जाना) (कंश का अफ़सोस करना)

कन्श शेर—बशर राजे दिली कहकर जलीलो खार होता है।
निकल जाती है वू जिसकी वह गुल बेकार होता है॥

हा! मैं क्षत्री शूरवीर। शूरवीरों में महान क्षत्री होकर मरने का ध्यान यह अपमान। बस बस अब जाता हूं और वसुदेव से देवकी के प्रसूती के वचन ले आता हूं।

शेर—देवकी को हो प्रसूती मेरे घर पर आन कर।
फिर तो जितने पुत्र हों मारुं कटारी तानकर॥

प्रस्थान

प्रथम परिच्छेद (पांचवां दृश्य)

[वसुदेव का मन्दिर]

(राजा वसुदेव का बैठे दिखाई देना कंश का आना)

कन्श—श्री महाराज को प्रणाम।

वसुदेव—कुशल हो। आइये २ पधारिये। (कंश का बैठना)

वसुदेव—कहिये मुझ पर कैसे कृपा हुई।

कंश शेर—प्रेम बश होकर के अब कुछ याचना करता हूं मैं।
सत्य दिल से आप कहदें तो वचन भरता हूं मैं॥

वसुदेव—(हाथ में हाथ मार कर) लो यह कटारी लो

(तलवार हाथ से डाल कर)

शेर—लो कटारी हाथ में यह जान तक कुरवान है।

मांगलो अब कंश राजा दिल में जो अरमान है ॥

कंश-शेर—देवकी का प्रेम दिलमें लगरहा है रात दिन।

हो प्रसूती की खुशी घर पर हमारे रात दिन ॥

वार्ता—श्री महाराज मुझको देवकी से अत्यन्त प्रेम है। इसलिये उसकी प्रसूती की खुशी सदैव मेरे मन्दिर में हुआ करे यही सेवक की याचना है।

वसुदेव—राजन यह क्या मांगा। लो मुझे मंजूर है मैं वचन देता हूं।

कन्श—धन्य है। धन्य है। श्री महाराज आपको धन्य है सेवक को आज्ञा हो।

वसुदेव—बैठिये २ अभी क्या जल्दी है।

कन्श—(हाथ जोड़कर) श्रीमान् मुझको एक कार्य्य वश जाना है।

वसुदेव—(मौन धारण करते हैं)

(कन्श का प्रस्थान) (बलदेव जी का प्रवेश)

वलदेवजी—सावधान। सावधान। पिता जी सावधान।

वसुदेवजी—बेटा क्या है।

वलदेवजी—कंश को प्रसूती के वचन न देना।

वसुदेवजी—बचन। बचन। दे चुका हूं।

बलदेवजी का गाना

पिता जी हुवा महा अन्धेर ॥

देते वचन न सोचा समझा कीनी जरा ना देर ॥ पिता जी० ॥

साफ साफ अति मुक्तक कह गये करी ना हेरा फेरा ॥ पिता० ॥

देवकी के सुत कंश आदिक का मार मार करे ढेर ॥ पिता० ॥

घर में प्रसूवी क्रूर २ ज़ालिम मारें सुतों को घेर ॥ पिता० ॥
प्रेम भाव किंचित ना समझो, शत्रू है ये शेर ॥ पिता जी० ॥

वसुदेव=अवश्य वचन देना बुरा हुवा । परन्तु बेटा अब क्या होसक्ता है

(सर पकड़ना)

चलो बेटा किसी अवधिज्ञानी मुनि से निरणय करेंगे ।

बलदेवजी--चलिये २ पिता जी शीघ्र चलिये । (प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (छठा दृश्य)

देवकी का महल

देवकी का दो पुत्रों सहित सोते दिखाई देना देवों का आना

इन्द्र=(देवसे) देवकी के जो युगल पुत्र सोरहे हैं इनको तुम शीघ्र एलका माई भद्दलपुर पहुंचावो और वहां से जो उनके मृतक पुत्र हुये हैं लाकर देवकी की गोद में सुलावो ।

देव=अच्छा महाराज जैसी आज्ञा ।

इन्द्र=और सुनो ।

देव-श्री महाराज ।

इन्द्र-देखो तीन मरतबा तुमको ऐसा करना होगा क्योंकि देवकी के षट पुत्र मोक्षगामी हैं तथा चर्म शरीरी हैं ।

देव--बहुत अच्छा ऐसाही होगा ।

देव का जाना दूसरी तरफ़ से देव का दो मृतक बालक लाकर सुलाना कंश का आना ।

कन्श का प्रवेश देवकी का जाना

कन्श--शत्रू ! शत्रू ! ओ जानी शत्रू ।

एक दम दोनो लड़कों को उठा लेता है ।

मुझ से शत्रुता धर कर तुम कहां बच सकते हो ।

शेर—शेर का शत्रू हुवा सायर भला कहां खैर है।
देवकी सुत कन्श का शत्रु बड़ा अन्धेर है.....(पटख कर)
आंख फोड़ू। हाथ तोड़ू। मारदूं। मारदूं अब मारदूं।

(पत्थर पर पटख पटख कर मारना)

गले में फांसी डालकर जल्लाद को रस्सी देकर

कन्श—(जल्लाद से) खींच। खींच जितना तेरे में बल है खींच।

(दोनों का खींचना)

कन्श—देख। देख। अभी जीते तो नहीं हैं।

जल्लाद—मृत्यु को प्राप्त हुए देखो पड़े तो यहीं हैं।

कन्श—नहीं। नहीं। मैं नहीं मान सक्ता हूं। देखो मेरा हुक्म बजा लावो। आंखों में लोहे की सलाखें गरम करो जीते जी दोनोंको भस्म करो।

जल्लाद—बहुत अच्छा जैसी आज्ञा। (प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (सातवां दृश्य)

(वसुदेव मंदिर)

वलदेवजी—पिता जी पापी कंश हमारा जानी शत्रू है।

वसुदेव—हां हां मैं सब कुछ जान रहा हूं। परन्तु वचन देकर मजबूर हुवा हूं

वलदेवजी—पिता जी सत्य है। परन्तु मेरा मन धैर्य्य नहीं धरता है। तीन मरतबा युगल जोड़ पैदा हुवे परन्तु उसने निरदयता से प्राण रहित किये। ये मुझसे नहीं देखा जाता। कंश हमारा शत्रू है तो हम कंश के शत्रू हैं।

शेर—क्षत्री वंश हमारा पिता जी म्यान में तलवार है।
अन्याय सन्मुख देखना मुझसे बहुत दुशवार है॥

(तलवार निकाल कर)

जान ले ले खंजरे खूंखार किस्सा पाक हो।
आज पापी कंश की मुट्ठी भरी एक खाक हो ॥

वसुदेव—छमा छमा बेटा छमा। अवश्य कंश शत्रू है परन्तु बचन देने से मजबूर हूं बेटा वह छहों पुत्र मुक्त गामी हैं उनको कौन मार सकता है अवश्य वह दूसर अस्थान पर रहे होंगे क्या तुमने अति मुक्तक मुनी के मुखारविन्द से नहीं सुना।

बलदेवजी—(मौन धारन करते हैं) (रानी देवकी आती है)

देवकी—(पैरों को छूकर) चरणारविन्द को प्रणाम।

वसुदेव—आइये आइये विराजिये (बैठना)

बलदेव—(पैर छूकर) माता के चरणों को प्रणाम।

देवकी—आनन्द रहो बेटा खुश रहो।

वसुदेव—प्यारी कैसे आना हुआ।

देवकी—प्राण नाथ आज रात्री के भोर समय में अद्भुत स्वप्न दिखाई दिये हैं सुनिये।

अव्वल—तो सूर्य उगता दिखाई दिया।
दूसरे=एक देवका विमान मेरे मुख में प्रवेश करता दिखाई दिया
तीसरे-एक शेर वन में दहाड़ते नजर आया।
चौथे=जल जलमें कंवल कंवल पर चांदनी का साया।
पांचवें-एक ऊंचा मन्दिर दिखाई दिया।
छठे-ध्वजा की पंगत आसमान तक दिखाई दी।
सातवें-रतनों की रास दिखाई दी परन्तु इस समय मेरा मन सिंयों से क्रीड़ा करने को चाहता है तथा पापी कंश के सरपर पैर रख कर तलवार की चमक देखने को मन भटकता है। दिखाओ दिखओ मुझ को तलवार की चमक शीघ्र दीखाओ।

वसुदेव—बस प्यारी मालूम हुवा की तुम्हारे कंशको मारने वाला पुत्र पैदा होनेवाला है।

बलदेव---हमारा दुख दूर होने वाला है।

वसुदेव—प्रिय सुनो। (गाना)

तर्ज-बंशी घाट पे बंशी बजाई बंशी बजइया यही तो है।
अति मुक्तक मुनी कहते थे, वह कृष्ण कन्हइया यही तो हैं॥
यादो बंशी तारागण में, भानु दिवइया यही तो हैं।
तीन खंडका राज करे, और कंशादिक का मान हरे।
बंशी बजा मन जीतन हारा, बंशी बजइया यही तो हैं॥
सुतको प्रेम रूप हो पाले अंत कहीं कोई दाह मिले।
करना क्या बलदेव बतावो, सोच हमें बस यही तो है॥

बलदेवजी---जिस समय भ्रात पैदा होगा। फौरन दूसरे स्थान पर पहुंचा देंगे। और उसके दूध पिलाने को कोई दूसरी माता मुकर्रर कर देंगे।

वसुदेव—यही मेरी राय है। परन्तु कंश को खबर न होने पावे। और पुत्र के तवल्लुद होने की सायत से ख़बरदार रहो।

बलदेवजी—बहुत अच्छा श्री महाराज। (प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (आठवां दृश्य)

(देवकी का महल)

(देवकी का व्याकुल होना)

वसुदेवजी—प्रिय आज भादव सुदी अष्टमी का दिन है। और अर्धरात्री का समय है। ऐसे समय में चित्त क्यों व्याकुल है।

देवकी—शरीर में कष्ट महान है। (पुत्र का आगमन)

वसुदेव—बेटा बलदेव।

बलदेव---(जागकर) पिता जी क्या आज्ञा है।

वसुदेव----चलो पुत्र को उठा लेचलो शीघ्रता करो।

बलदेव—पिता जी सहज २ वचन उचारिये । चलिये २ भ्राता मुझको लाइये । 　　(पुत्रको लेजाने को तैय्यार होना)

देवकी—हाय हाय पुत्र कहां लिये जाते हो ।

बलदेवजी—माता संतोष रख चिरंजीव रहने की आशीरवाद दो ।

बलदेव वासुदेव का पुत्रको लेकर जाना उग्रसेन का रोला मिचाना

उग्रसेन—(पिंजरे मेंसे) राज महल में कौन बोल रहा है ।

बलदेव—(राजन मौन धारण कर) तुझको बन्दीग्रह से मुक्त करने वाला पुत्र पैदा हुवा है-कंश के भय से दूसरे स्थान पालने अर्थ लिये जाते हैं ।

उग्रसेन—मुझ को बंदीग्रह से मुक्त करने वाले । देवसैन मेरे भाई की पुत्री के पुत्र तू चिरंजीव रहो आनन्द रहो (पुष्पवृष्टी करताहै)

(बलदेव वासुदेव का प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (नवां दृष्य) गोकुल का जंगल

(देवी का मंदिर)

(मेह बरसना अंधेरे का होना नगरी के देव का सींग में दीपक लगा कर रोशनी करना । साथ २ आना तथा जमना जल घुटने २ होता है । बलदेव जी गोद में लेते हैं वसुदेव जी छत्री लगाते हैं)

वसुदेव—(जमना पार होकर) बेटा यह मन्दिर किसका है ।

बलदेवजी—पिता जी यह देवी का मन्दिर है । (दूसरी ओर से ग्वाला पुत्री लेकर आता है)

सुनन्दाग्वालया—श्री महाराज अर्ध रात्री समय कैसे आना हुवा ।

बलदेव—तुम बताओ तो क्या ले रहे हो ।

सनन्दा०—गाना-तर्ज भजन—

सुनो सुनो श्री महाराज, सुनाऊं मन को विपदा आज ।

इस देवी की पूजा की थी, पुत्र मिलने के काज ॥
धोका इस पापन ने कीना, पुत्री हो गई आज ॥ सुनो २ ॥
गोकुल में स्त्री हंसती हैं, आवे नार को लाज ।
जो ये पुत्र बदल मो देवे, बन जा मेरा काज ॥ सुनो २ ॥
वरना पुत्री मार चढ़ाऊं, नार हुक्म मो आज ।
करूं मैं क्या बलदेव बतावो, बना रहे सरताज ॥ सुनो २ ॥

बलदेव—प्रभू । प्रभू । तेरी लीला अपरम्पार है । चौपाई ॥

संतन के प्रभू काज संवारे । करने सहाय-रूप अति धारे ॥

वार्ता—अय गोकुल के ग्वाल हम तुम को पुत्र बदल देते हैं ।

ग्वालया०—लाइये २ श्री महाराज लाइये ।

बलदेव—परन्तु सुनो ।

ग्वालया—(हाथ जोड़ कर) श्री महाराज !

बलदेव—देखो पुत्री को हम अपने घरपर लिये जाते हैं । और इसे (पुत्र देकर) पुत्र की तुम तन मन धन से रक्षा करना । सुनो

गाना—दोहा-देवी ने दिया पुत्र यह, घर पर कहना जाय ।
मामा इस के कंश को, खबर न होने पाय ॥
यही अब दिल में तुम जानो । नसीहत हमरी ये मानो ॥

दोहा—नौ निद्ध बारह सिद्ध, हों घर पर तेरे आज ।
हमको पापी जान लो, देते हैं सर ताज ॥
यही बस मनमें तुम ठानो । नसीहत हमरी ये मानो ॥

ग्वाला—जै हो जै हो श्री महाराज की जैहो ॥ (शेर)
नहीं जाहिर ये होनेका, चाहे तनसे जुदा हो सर ।
रखूंगा इस हिफ़ाजत से, परिंदा भी न मारे पर ॥ (प्रस्थान)

प्रथम परिछेद (दसवां दृश्य)

मकान देवकी

(माता देवकी चितातुर दिखाई देती है बलदेव जी पुत्री लेकर आता है)

देवकी—हाय २ पुत्र तुझको कहां पाऊं। क्या कारण बनाऊं।

बलदेव—संतोश माता शंतोश। (गाना)

माता इतना न मन घबराओ।
सब्र करो कुछ समय में अब तुम माता कृष्ण कहाओ। मात०॥
गोकुल में पलता है ललना मन को अति हरषाओ। माता०॥
बदले में यह पुत्री लाया। आवे कंश दिखाओ॥ माता०॥
राज त्रिखंडी भ्रात देख कर। अतुल सुख को पावो। माता०॥

देवकी—अच्छा बेटा पुत्री को यहीं सुलादीजिये।

बलदेव जी—(पुत्री सुला देते हैं)

देवकी—चलिये २ बेटा चलिये पापी कंश का आगमन है।

(दोनों का जाना कंश का आना)

कंश—(जल्लाद से) उठालो २ शत्रू की जान निकालो।

(जल्लाद का लड़की को लाना कंश का हाथ में लेना)

कंश—हैं। हैं। अबके तो पुत्री का जन्म है। परन्तु पुत्री मुझ क्षत्री से शत्रुता करके क्या कर सकती है। इस लिये प्राण लेना बृथा है (कुछ सोच कर) परन्तु ऐसा न हो कि कहीं इस का भरतार मेरी जान का शत्रू हो। शेर

दुनिया में कोई मनुष परखें नहीं नापाक को।
(जमीन में गेर कर)
बस दबाता हूं अभी चुटकी से इसकी नाक को॥

नाक दबाना आवाज का होना। यमराज मलकुलमौत का नज्जारा

यमराज—(भयानक शक्ल) ओ पापी कंश मेरा भय नहीं मानता।

कंश—घबरा कर गिर जाता है तड़फकर) दूर। दूर। दूर हो दूर

ड्राप सीन

प्रथम परिच्छेद (१ दृश्य दूसरा बाब)

(कंश का महल)

(कंश का निमित्त ज्ञानी से पूछते नजर आना।)

कंश—श्री महाराज। भूकम्प का होना तथा एक भयानक शल्क कभी २ अर्ध रात्री के समय में मुझे क्यों दीख पड़ती है। कुछ यह मेरी समझ में नहीं आती है।

निमत्त—(कुछ गुन गुना कर) अय राजन किसी स्थान तेरा शत्रू पल रहा है। उसके पुन्य होने के कारण यह अपशगुन दीख रहे हैं

कंश—(चौंक कर) मेरा शत्रू। मैं ने अपने शत्रू को अपने हाथ से प्राण रहित किये हैं।

निमत्त—दोहा। शत्रू तेरा प्रबल है राजा लो ये जान।
लड़कर सन मुख आपके नहीं बचेंगे प्राण॥

चौपाई—संधी कर यही मेरे मन भाई। कुमता त्याग सुमत मन लाई॥
ईर्षा त्याग बात मेरी मानों। शत्रू हरन यही तुम जानो॥
बस राजन हम आज्ञा चाहते हैं।

कंश—श्री महाराज की इच्छा। (निमत्त ज्ञानी का जाना)

कंश—शेर—अभी कोंपलही निकली हैं जरा सी देर में मोड़ू।
बस मैं अब देवकी वसुदेव को ही मार कर छोड़ू॥

वार्ता—सत्य देवी का ध्यान लगाता हूं। शत्रू हरण का यही उपाय बनाता हूं। (एक तरफ ध्यान लगाना आवाज का होना) देवियों का आना

देवी—राजन हमको क्यों याद किया है।

कंश—शेर—सुना है शत्रु दुनिया में कोई पैदा हुआ मेरा
मार दो जान से उसको मुझे इस दुख ने है घेरा॥

देवी—चक्री अर्ध चक्री सुनो, हल धर ले हो जान ।
इन के सिवा जो शत्रु हो, छिन में ले ले प्रान ॥

लावनी

छिन इक में लेलें प्राण राजा हम, देर नहीं कुछ लाते हैं ।
शत्रु तेरा जिस जा पै हो, मार उसे अब आते हैं ॥
अवधी भी जोड़ी हम सबने, पता नहीं कुछ पाते हैं ।
पूछ पाछ वह अवधि जोड़ कर, मार उसे अब लाते हैं ॥

(प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (दृश्य दूसरा—बाब दूसरा)

(गोकुल भवन)

(गोपियों का गाते नजर आना)

गोपी—गाना—यशोदा को पुत्र मिला माधो वन में । यशोदा० ॥
देवी ने दिया पुत्र अनोखा, बस रहो मोरे मन में । यशोदा०
हाय क्या कीना, मन हर लीना, पाँव पद्म को लखके ।
आँखें चाहें रात दिन देखें, बसे रहो नस नस तन में । यशोदा०
चितवन भों की प्रेम अनोखी, देखो सखी चल चल के ॥
मनके भाव प्रगट ये होता, मानो औतारी जग में ॥ यशोदा को०

(गाते गाते जाना) देवियों का आना ॥

पहली देवी—गाना—गोकुल में शत्रू हमरा है, सुन लो धर के ध्यान ।
दम में दम में जान निकालें लेलो लेलो प्रान ॥
दू०देवी—शत्रू का प्यारी जान । मरना नहीं आसान ।
होगा न कुछ इस आन । जायगा अपना मान ॥ मेरी मान० ॥
ती०देवी—गाना तर्ज़ भजन ।
सखी आज पण्डिता का रूप बनावो ।
पुत्र कुलच्छन पापी तेरा जाके यही सुनावो ॥ सखी०

जो तुम कुशल चाहते अपनी, जमना में इसको बहावो । सखी०॥

चौथी देवी—माया मई अस्तन विष घोलूं वार वार दूं चुखाई ।

जो न मरा वह मरे यतन से, पैरों से मिलकर दबावो । सखी

प्रथम परिच्छेद (३ दृश्य बाब दूसरा)

यशोदा का महल

कृष्ण महाराज का झूले पै झूलना गोपियों का खुशी मनाना

गोपियां—गाना--तर्ज गुन्दू पै जुल्फों ने बांधी कटार दी वई । प्यारे (महबूबा गुलेनार दीवई तोबा । तोबा ।

गाना—ललना खिलावो, प्राणप्यारी, गोकुल की नारी सारी, माता तोपे जायें वारी । ललना खिलावो मन हरषावो, दिल बहलावो, ललना दिखावो प्राणप्यारी गोकुल की नारी सारी। माता तोपे जायेंवारी

शेर—चांद चेहरे को लख शरमिन्दा हो आसमान चला ।
सदा पै शर्म हुई भाग चला भाग चला ॥
माता तुम्हारे भाग्य की तारीफ क्या करें ।
हमरी यही दुआ है कुशल क्षेम से रहैं ।
जायें वलिहारियां । दिलबर प्यारियां । जीवे ये ललना झूलें पलना जायें जायें वारी ललना ।

वारी वारी सिर गोपियों का बच्चे को गोदमें लेना

देवी का गोपी के रूपमें आकर दूधी पिलाना

कृष्ण का खींचना देवी का चीखना

गाना

प० गोपी—आवो ललना लेवें बलैयां ।

दू० गोपी—(गोद में लेकर) वारी होजाऊं जाते रहो भय्या ।

ती० गोपी--मुझको भी दो गोद में मेरी मय्या ।

देवी गोपी के रूप में--(उठाकर) लाओ मुझ मैं पड़ूं तोरे पैयां ।

आंख बचाकर दूध पिलाना कृष्ण महाराज का अस्तनों को खींचना देवी का चीखना

देवी—दुहाई । दुहाई । माता यशोदा तेरी दुहाई ।

यशोदा—बहन क्या विपत्ति आई ।

देवी शेर—मेरे अस्तन को खींचा है मरी मैं हाय हा मैया ।
पडूं पैयां तुम्हारे मैं छुड़ाओ हाय हा मैया ॥

यशोदा—छोड़ो २ बहन मेरे स्तनों को छोड़ो ।

कृष्ण महाराज का छोड़ना देवी का गायब होना दूसरी ओर से मायामई पण्डित का प्रवेश

यशोदा—(पंडित को देख कर) पण्डित जी को प्रणाम ।

पण्डितजी—बने रहो ग्वाल पाल । आनन्द रहो । तुम्हारा ललना देखने के लिये आज हम यहां पधारे हैं ।

यशोदा-विराजिये । विराजिये । (बैठना) ज्योतिष विद्या से विचार कर ग्रहों का फल सुनाइये ।

पण्डितजी—(कुछ गुनगुना कर) बस जिजमान आज्ञा चाहते हैं ।

यशोदा—श्री महाराज मनही मनमें गुन गुनाकर रहगये। कुछ तो जवान से निकालिये । ग्रहों का फल सुनाइये ।

पण्डित—माता मेरा चुप रहनाही उचित है ।

यशोदा—नहीं नहीं महाराज सुनाकर जाना होगा।

पण्डितजी—अच्छा २ जो कहूं गा । करना होगा ।

यशोदा—अवश्य यदि बुद्धी अनुसार होगा ।

दूसरी तरफ एकदेव कृष्णकी रक्षा को अद्भुत रूपसे पण्डित के भेष में आता है और बैठ जाताहै

पंडित जी—लो सुनो । (मटक कर गाना गाते हैं)

गाना-तर्ज रसिया

अर सोने की छुरियां हैं। अजी सोने की छुरियां हैं।
ये चितवन जो लड़के की है, सोने की छुरिया हैं। अ०
तुम समझ रहे हो सुख जिसको, दुःखों की लड़िया हैं।
अजी दुःखों की लड़ियां हैं।

दोहा—पैरों में जिसके पदम करदे घर का नास।
गोकुल सब विध्वंश हो कौड़ी रहे न पास॥
चलो अब अच्छी घड़ियां हैं। अजी सोने की छु० ॥

दोहा—जमना में फेंको अभी, करो जरा ना देर।
वरना फिर पछतावोगे, जग में हो अंधेर॥
अजी दुक्खों की लड़ियां हैं। तुम समझ रहो० ॥

(दूसरे पंडित का जवाब)

दूसरापंडित दोहा—पदम बुरा किस शास्त्र में, लिक्खा है नादान।
पाखंडी आ सामने, पकड़ूं दोनों कान ॥
अरे कहां पढ़कर आया है। तू बकता है कहां ध्यान। अरे क्या अद्‌भुत माया है। तू०...

दोहा—पंडित जैसा तू बना, वैसा ही मो जान।
थोड़े ही में समझ लो, लैं लूं तेरे प्रान॥ अरे क्या अवसर पाया है। तू पंडित है नादान। अरे कहां पढ़कर आया है।

दोहा—देखूं तेरे गुरू को, चल तू मेरे साथ।
गर किंचित भी ऐब हो, बिकूं मैं तेरे हाथ।
अरे कहां धोखा खाया है। अरे कहां पढ़कर आया है।

(कान पकड़ लेना)

देवी—क्यों मरने को जी चाहता है।

देवका—अय प्यारी दिले शैदा जो तू है वही मैं हूं अय प्यारी

(कहते हुवे एक तरफ चले जाते हैं)

प्रथम परिच्छेद (दृश्य ४)

जंगल मे दरिया दुर्योधन आदि कौरों का ईर्षा भाव करना

कौरवा मिलकर गाना—दो आज भीम को मार।

बृक्ष ऊपर आज उसे चढ़ाओ। पेड़ उखाड़ दरिया में बहाओ
सरपर भारी चोट लगाओ। सोचो हो क्या यार दो आज
भीम को मारो॥
एक एक करके पांचो मारो। फिर तो अतुल सुक्ख को
पावो तनका जोर लगाओ प्यारो। होवै जै जै कार। दो०

(भीम का आना कौरवों का चुप होना)

भीम—(हंस कर) हैं। हैं। आज कौवों की सैना क्या सोच रही है

शेर—देख कर मुझ को अकेला खुश हुये हो आज तुम।
याद रक्खो इसतरह नहीं पा सकोगे ताज तुम॥

कौरवा—भ्रात यह आपका खाम ख्याल है कौरवों का शरीर आप का
गुलाम है। (पेड़ देख कर)
चढ़ो इस पेड़ पर भ्राता यही दिल में हमारे है।
इनायत की नजर हमपर हो हम भ्राता तुम्हारे हैं। (भीम का चढ़ना

भीम—तो मैं अभी चढ़ता हूं। (भीम का चढ़ जाना)

कौरवा—उखाड़ो उखाड़ो यारो देखते क्या हो। (कौरवों का चिपटना)

भीम—(पद्म आसन लगाते हैं) उठावो २ अपना २ बल दिखावो।

कौरवा—उखाड़ो यारो देखते क्या हो (सब का हारमानना)

भीम—लगावो अब के जोर और लगावो।

कौरवा—भ्राता हमतो हंसी करते थे हंसी।

भीम—(उतर कर) बेशक तभी तो पेड़ उखाड़ने का दम भरते थे।

गाना—तर्ज तुम से ऐंग वेरा गेर मैंने लाखों देखे भाले।
तुमसा धोका देने वाले मैंने लाखों देखे भाले ॥
मीठी बातें करने वाले, मैंने लाखों देखे भाले ॥
आओ। आओ। आओ। आओ। (गदा घुमाकर)
मुझ से रण संग्राम मिचावो ॥
एक मुष्टका सेही मेरे सौ कौरव के लागे ताले॥ तुमसे धोका०
चढ़ा देख तुमरे मन आई, अब तो इस की करो सफाई।
फूंक २ कर दूंगा छाई, और किसीके पडे हो पाले ॥तुम०

(कौरवा घबरा कर घुटने मोड़ कर)

कौरवा—गाना-हंसी करते थे भ्रात। हंसी करते थे भ्रात। तुमरी हमरी एकही है मात हंसी० ॥
पिता तुल्य तुम हमरे भ्राता, हो तुम चतुर सुजान।
हांसी में ये हुई गल फांसी, बखशो हमरे प्राण ॥
नहीं मन में ये बात, नहीं मन में ये बात, तुमरी हमरी० ॥

भीम—शेर-चढ़ो सब पेड़ पर मिल कर यही आज्ञा हुई तुम को।
मैं देखूं कौन चढ़ता है, दिखाओ बल सभी मुझ को ॥

कौरवा—लो भ्राता हम अभी चढ़कर दिखाते हैं।

(सब कौरवों का चढ़ना भीम का पेड़ उखाड़ना)

भीम—(खम ठोक कर) बोल श्री जिनेन्द्र देव की जै।

(पेड़का उखाड़लेना कौरवों का धमा धम गिरना)

कौरवा—बचावो २ भ्राता हमारे प्राण बचावो।

(भीम के मन दया आती सब को बचाता है)

कौरवा—(पेड़ से उतर कर) चलो भ्राता दरिया अबूर की सैर करेंगे।

कौरवा—देखो पानी के अन्दर कैसे चमकदार मोती दीख रहे हैं।

भीम—(झुक कर देखता है) वाह२ क्या अच्छे मालूम होते हैं।

कौरवा--(पैर पकड़ कर धक्का देते हैं)

भीम=(गोते खाता हुवा) अरे चांडालो मुझसे बच कर कहां जासकते हो याद रक्खो कि तुम सौ के सौ को मैं इकलाही प्राण रहित करूंगा

कौरवा--देखा जायगा। पहिले अपने प्राण तो बचा। चलो यारो काम फतह हुवा। (ताली पीटते हुये भाग जाते हैं)

भीम--(कुछ देर में निकल कर) कौरवा पापी महान हैं। हमारे मारने का इन लोगों को ध्यान है। खैर देखाजायगा।

दोहा—जाको राखे साइयां, मार सके नहीं कोय ॥
बाल न बंका कर सके, जो जग वैरी होय ॥

(प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (५ दृश्य)

देवियों की वर्तालाप

प० देवी=बड़ा अपमान हुवा।

दू० देवी--परन्तु मेरे कहने पर तुम्हारा कहां ध्यान हुवा।

प० देवी०--जो हुवा। सो हुवा। अबके फिर उसका बल देखने को जी चाहता है।

प० देवी--फिर वही होगा।

दू० देवी०कुछ भी हो। मैं जम्मल वृक्ष बनूं।

ती० देवी०--तो मैं अरजन वृक्ष का रूप धारण करूं।

प० देवी=वाह वाह क्या अच्छी बात है। हम तुम दोनों ओखली के इधर उधर खड़े हो जायेंगे जिस समय कृष्ण हमारे नीचे आयेगा

ती० देवी--इधर से तू और उधर से मैं गिर कर प्राण रहित करेंगे।

चौथी०-और मैं पक्षणी बन कर खाजाऊंगी (अद्भुत डकोरा का लेना)

पां०देवी-मैं सांड का रूप धर प्राण रहित करूंगी।

छ० देवी—यदि हम से कुंवर न जीता गया तो क्या होगा।

सा० देवी०-अरी बावली जीता क्यों न जायगा। यदि ऐसा हुवा तो हम अपने२ भरतार को बुला कर लायेंगी परन्तु शत्रू को अवश्य नीचा दिखायेंगी।

प्रस्थान

कृष्ण महाराज मित्र के साथ आते हैं मुंह और हाथ दही माखन में सना हुवा है

कृष्ण-(यार के हाथ में हाथ मार कर) कहो यार कैसी भई।

यार०--(हाथ में हाथ मारता है) खूब खाये दूध और दही।

कृष्ण--(मटकी लेकर) लो। लो। यार खाओ२ (यारका गाना)

यार गाना--यार मैं तो खा खा के हुवा दिवाना॥ यार०॥

खा खा के माखन अफरा है पेट स्वामी मुझको बचाना॥

सहस्र मटकनी माखन खाई, धन धन तुम को वीरा।

सब गोपिन आ रोला करेंगी, चहिये न ऐसा सताना॥ यार०

कृष्ण—कुछ भय मन में न लावो भ्राता, खावो, खावो, खावो।

जो कोई पूछे किसने खाया, कृष्ण का नाम बताना॥ यार०॥

(दोनों का मिल कर खाना योशोदा का आना

यार—भागो, भागो, देखो यशोदा माई आती हैं।

कृष्ण—आओ २ छिप कर देखें ये क्या कहती हैं। (छिप जाना)

यशोदा—(हाथ मलकर) हाय हाय यह घरमें आज क्याखेल बखेड़ा है। हाय २ दय्या यह क्या हुवा मेरी मय्या। अरी शारदा हे गोमती तुम कहां चली गई हो।

गोमती—माता क्या है।

यशोदा—देखती नहीं यह आज घर में क्या खेल बखेड़ा कराया है।

गोमती—माता यह सब कृष्ण महाराजका माया है। (गोपियां आती हैं)

गोपी बहुनसी---हाय, हाय, हमारा सारा माखन खाया है। दुहाई दुहाई यशोदा माई तेरी दुहाई।

यशोदा----अरी क्या विपत्त आई। (सब गोपियों का मिलकर गाना)

गाना—तर्ज=अय प्यारी दिले शैदा जो तू है वही मैं हूं।

सुनिये यशोदा रानी छोड़े यह बृज तिहारो।
कहीं जाय के बसेंगे यहां से करें किनारो॥ सुनिये०॥
नित कहां तलक सहिये नुकसान तेरे सुतको।
घर जाये के हमारे माखन चुरायो सारो। सुनिये०॥

दू० गोपी—छींके पे होके मोगी लठियासे फोड़ डारी।
दधी की मथनियां तोड़ी। माखन सभी बिगारो॥ सुनिये०
नित करे हान हमारा। माता इसे लो वर जो।
ऐसा चपल यह ढीठ है। यशोदा ये सुत तिहारो। सुनिये०
यहां तेरे पास बालक, ये बन के आये बैठ।
जाकर के घर सखिन के, माता जरा निहारो॥ सुनिये०॥

यशोदा--अरी देखो तो यह कहां गया है।

गोपियां--(देख कर) देखिये वह चुप चाप छिपा हुवा है।

यशोदा—(पकड़ कर लाना) अरे कपूत यह आज घर में क्या कर रक्खा है। और देख सब गोपियां मुझको उल्हना दे रही हैं

कृष्ण—(हंस कर) माता माखन खाने को जी चाहता है।

यशोदा—अभी माखन खाकर तृप्त नहीं हुई है। बस ये अवगुण मुझ से सहन न होगा। (रस्सी उठाकर । बस मैं तुझ को बांध कर रखना उचित समझती हूं।

पत्थर की ओखली से कृष्ण का बांधना कृष्ण महाराज का मुसकराना यशोदा का प्रस्थान)

(सब गोपियों का जाना दो बृक्षों का आनकर खड़े होना)

कृष्ण—(आंख से इशारा करके) आगये मेरे शत्रू भी आन खड़े हुवे

(यार का आना)

कृष्ण महाराज का झटका मारना पत्थर उखड़ कर टुकड़े टुकड़े होना। शीघ्रता से हाथ में हाथ मार कर जवाब देना।

यार—कहो यार यह क्याभई ।

कृष्ण—(हाथ में हाथ मार कर)

खूब खाये दूध और दही । (यार अचम्भित हो जाना)

यार—यहतो कोई औतारी है । बोल श्रीकृष्ण महाराज की जै ।

कृष्ण—(पेड़ों को उखाड़ते हुवे) तुम दोनो मेरे क्यों शत्रू हुवेहो ।।

(ऊखाड़ना देवियों का निकल कर भागना) माया मई सांड का आना

यार—भागो भागो यह सांड महाबलवान है ।

कृष्ण—यह माया मई सांड है तुम्हारा कहां ध्यान है । (दोनों का लड़ना सांड का निरमद होकर भागना यक्षणी का आना)

यक्षणी—(हाथ लपका कर) खाऊं, खाऊं, आज तेरा भोग लगाऊं ।

(कृष्ण की तरफ को लपकना)

कृष्ण—(थपड़ मारकर) आ, आ, तुझ को शत्रूताई का मजा चखाऊं

दोनों का घोर संग्राम यशोदा माई व ग्वाल बाल का अचम्भित होकर देखना यक्षणी का भागना गोकुलवासी धन्यवाद देते हैं

प्रथम परिच्छेद दूसरा बाब (छठा दृश्य)

(देवकी का महल)

देवकी—(बलदेव से) बेटा । आज पुत्र के दर्शनों को जी भटक रहा है

बलदेव—(सोच कर) माता पुत्र के देखने की एक तरकीब होसकती है

देवकी—क्या है शीघ्र बताओ ।

बलदेव—गउवें पूजन अर्थ जाना।

देवकी—बेटा यह मिथ्यात है, जिन वानी, जिन मुनी, जिन बिंब को पूजनाही सम्यक्त है। क्योंकि गउवों के पूजने से कर्मों की निरजरा नहीं है।

बलदेव—अवश्य ये सत्य है। परन्तु अब क्या करें बिना परपंच रचे पुत्र के दर्शन महाल हैं।

माता—संसार में सदैव मिथ्यात होने का मुझको ख्याल है।

बलदेव--माता जो होना होगा होता रहेगा। आप अपना कार्य्य करिये

देवकी--खैर बेटा जैसी आपकी समझ। परन्तु पुत्र से मुझ को शीघ्र मिलाओ।

बलदेव—आज अमावश का दिन है नगरीमें मनादी कराता हूं कि सब मथुरा वासी गोकुल में धावो। गउवें पूजने की खुशी मनावो

देवकी--मौन धारण करती है बलदेव जाते हैं।

बलदेव का जाना बहुत सी स्त्रियों का आना गउवों के पूजने की खुशी मनाना।

गाना

चलो सखी मिल गोकुल को गौ माता पूजें आज जी। गव०।
माता इस पर जां बलिहारी, दूध पिलाती शाम सवेरी॥
बलध चलें हल करें ना देरी, विगड़े सवांरे काज जी। गौमाता॥
मावस को सब मिल कर आओ, पूजा कर कर हर्ष बढ़ाओ।
चलो चलो गोकुल को धावो, रक्खो हमारी लाज जी॥ गौ०॥

(देवकी व मथुरा वासियों का प्रस्थान)

(देवी देवों का प्रवेश)

देवी (देवसे गाना—तर्ज डेढ़ मिसरा

गोकुल में एक ललना है नहीं बलका ठिकाना। नहीं कुछ उसका ठि०।
देवेंद्र भी गर जाय तो वां मातही पाना। शरमिन्दा हो आना।

(हम रूप बदल कर गईं वां सातोंही वाना। मगर वह मनमें डरा ना। गो०
गो मान भंग हमरा है अपनाही लो जाना। नहीं कुछ हम हैं विगाना ॥
देव-प्रिये यह क्या खाम खयाल है।

गाना तर्ज-बुड्ढा छोटीसी छोकरी को ब्याहे लिए जाय।
कैसी बातें हैं तुमारी सुन्दरिया जान। आंधी चलाऊं मेह बरसाऊं
लेलूं लेलूं छिनक एक में जाके प्रान। कैसी० ॥ प्रलय दिखाऊंगा, जल में बहाऊंगा। मारूं २ मैं पत्थर शिला तान तान ॥ कैसी० ॥ प्रस्थान ॥

प्रथम परिच्छेद (७ दृष्य गोकल भवन)

गौवों का पूजना मथुरा वासियों का आना

गोपियां—(गाना) रात दिन पूजो जी गइयां। रात दिन पूजोजी गइयां
पूज पूज मन हर्ष बढ़ावो। लेवो लेवो बलैयां ॥ रात० ॥
बछड़े हों तो जगको पालें, बछियां दूध पिलैयां ॥ रात० ॥

(गवालियों का लठ लेकर कूद कूद कर गाना)

बचे पालें जगको पालें, गौ माता कहो भइया। रात दिन० ॥
देवकी—बहन यशोदा आओ। अपना कुंवर हमें दिखावो।
यशोदा—माता अभी बुलाये लाती हूं।

(जाना कुछ देर में लेकर आना)

कृष्ण महाराज का आकर देवकी के पैरों पर गिरना

देवकी—गोद में बिठा कर आनन्द रहो बेटा चिरंजीव रहो।
(गोद में बिठा कर मुह चूमना अस्तनों से दूध की धारा का निकलना)
बलदेव—(मनमें) सितम गजब भेद आशकार हुवा। माता को गौके
दूध से न्हवन कराता हूं ताकि स्तनों की धारा का पता न लगे।
लो माता आज गौ के दूध से न्हवन करो (कलशा दूध का माता के सर पर डालना)
देवकी—बेटा यह क्या।
बलदेव—कुछ नहीं आज गौ के दूधसे न्हवन करो।

देवकी—कलशा मुझे दो मैं अभी न्हवन कर आती हूं। (जाती है)

कृष्ण—माता कहां जाती हो मैं भी आता हूं। जाना।

(माता का दूसरे कपड़े बदल कर आना)

देवकी माता—यशोदा हर्ष कर हर्षकर ऐसी त्रिखंडी पुत्र को देख कर हर्ष कर।

यशोदा—माता आपकी अशीर्वाद मेरे लिये सुफल हो।

देवकी गाना—सुनो तुम कुवंरा की माता। करम का पार नहीं पाता॥

दो०—पाक्रम तेरे कुंवर के कहत सके नहीं कोय।

बाल न बंका कर सके जो जग बैरी होय। कहूं क्या कहा नहीं जाता।

सुनो तुम कुवंरा की माता। दोहा।

यशोदा०—गोकुल वासी दास हैं, पत्र लो अपना जान।

॥ रूम रूम में कुवंर के बस रहे मेरे प्राण॥ प्रभू मोजननी

करा नाता॥ दास हैं तुमरे हम माता॥

देवकी दोहा—तुमरा ही सौ भाग्य है देखो बाल गोपाल।

हमको पापी जान लो कैसे देखें लाल॥ नहीं कुछ समझ में

ये आता। सुनो तुम कुवंरा की माता।

दोहा—मावस में हर माह के, पूजें गउवें आय।

जो तुझको कुछ चाहहो, लीजो वह मंगवाय॥ लाल तेरा

जो कुछ हो खाता—भेजदूं मथुरा से माता॥ सुनो तुम०॥

बलदेवजी—चलो माता सध्यां का समय होनेवाला है।

(देवकी—बेटा अभी चलती हूं (कृष्ण महाराज चिपट कर)

कृष्ण—नहीं माता तुम मुझको बहुत प्यारी लगती हो। मैं नहीं जाने दूंगा

देवकी—(मुंह चूमकर) चिरंजीव रहो। आनन्द रहो।

(माता का जाना कृष्ण का पकड़ना)

कृष्ण—माता कहां जाती हो।

मातादेवकी—बेटा ये पापी नेत्र तेरे प्रेम रस कौतूहल देखने से मजबूर हैं

बलदेव—(ताज्जुब से) हा भेद खुला जाता है। माता यह क्या कहती हो शीघ्रता करो।

देवकी—अच्छा बेटा लो चलो। (देवकी का जाना कृष्ण का पीछे २ लपकना)

यशोदा—ठहरो २ । बेटा कहां जाते हो। ठहरो।

॥ (कहते हुवे सब का प्रस्थान) ॥

प्रथम परिच्छेद (आठवां दृश्य)

भयानक जंगल

जिनमुनी का फ़ोटू परदे पर दिखाई देता है पीछे एक्टर खड़ा होकर वार्ता करता है धृतराष्ट्र आता है

धृतरा०—(पैरों में गिर कर) श्रीमहाराज के चरणारविन्द को नमस्कार है।

मुनि—राजन तेरे हृदय में धर्म की बृद्धि हो।

धृत०—श्रीमहारज मुझको आश्चर्य होता है। कि पांडव तथा दुर्योधन आदि में परस्पर विरोध का क्या कारण है?

मुनि-सांसारिक जीवन की प्रकृति भिन्न भिन्न है।

दोहा—एक गरभ से ऊपजे, सज्जन दुरजन गेह।
लोह कवच रक्षा करे, खांडा खंडे देह॥

दुर्योधन आदि १०० सौ पुत्र जो तेरे हैं। वह दुष्ट हैं। धर्महीन कर्म हीन क्रिया हीन हैं और युधिष्टिर आदि पांचों भाई सज्जनता लिये धम्म में लीन चर्म शरीरी तद्भव मोक्ष गामी हैं।

धृत०-महाराज यदि संग्राम हुवा तो किसकी विजय होगी।

मुनि—पांडव की विजय होगी एक समय में भीम तेरे १०० पुत्रों को प्राण रहित करेगा।

धृत०—हा ! प्राण रहित ! सौ पुत्रों को प्राण रहित देखूं यह मुझ से न होगा। ये संसार जंजाल है मोह जाल से निकलना महाल है

गाना

शरण लई जिन चरणों की "मोहे" जिन दिक्षा दो आजजी। मोहे०।
जप तप करके कर्म जलाऊं, करूं निर्जरा ध्यान लगाऊं।
आधा २ दुर्योधन को, देवूं सगरो राज जी ॥ शरण० ॥
दोनों में सन्धी रहे ताके, आधा आधा करदूं जाके।
कृपा करके ज्ञान देव अब, बिगड़े संवारो काज जी ॥ मोह०॥

वार्ता—श्रीमहाराज दुर्योधन आदि पांडवों में सन्धी करना उचित समझता हूं।

मुनि—सन्धी होना तो असम्भव है।

धृत०—श्रीमहाराज ! जो कुछ होना होगा। होता रहेगा। बस अब सेवक जाता है। और दोनों को आधा २ राज देकर दिक्षा लेने जाता है

प्रस्थान

प्रथम परिच्छेद (६ सीन)

धृतराष्ट्र का दरबार दुर्योधन आदि का बैठे दिखाई देना

धृत०—बेटा दुर्योधन !

दुर्यो०—(हाथ जोड़ कर खड़े होकर) पिता जी आज्ञा !

धृत०—हमारा विचार है कि संसार असार है।

दुर्योधन=(चौंक कर) हैं पिता जी यह क्या।

धृत०—बस बेटा मन में वैराग्य है।

दुर्यो०—कारण !

धृत०—कौरवों का परस्पर ताणा न मारणा।

दुर्यो०—उन दुष्टों ने पिता जीकोभी कष्ट दिया।

घृत०—दुष्ट कौन ।

दुर्यो०—वही पांचो पांडवा ।

घृतराष्ट—नहीं तू असत्य कहता है । वह भव्यात्मा हैं सज्जन हैं ।

दुरयोधन—बस पिता जी मैं ही दुरयोधन दुरजन हूं ।

धृतराष्ट—बस बेटा वैराग्य का यही कारण है । अब तुम और पांडवा भिन्न भिन्न देशों में आधा २ राज्य करो ।

दुरयोधन—आधा आधा वह पांच और हम सौ । क्या यही न्याय है ।

घृतराष्ट—अवश्य यही न्याय है । क्योंकि वह पांचो पांडव मेरे भाई हैं ।

दुरयोधन—आप के भाई तब तो राज के ६ हिस्से होने चाहियें ।

धृतराष्ट—सोचो समझो क्योंकि पांचों भ्राव युधिष्टिर आदि मेरे भ्रात पांडव के समान हैं ।

दुरयोधन—तभी तो पुत्रों का अपमान है ।

धृतराष्ट—वह कैसे । शेर

दुरयोधन—कहें क्या खाक कोई आप के मंतक निराले हैं ।
हमें बरबाद करने को यह ढंग अच्छे निकाले हैं ।
जिन्हें कहते हो इन्सां दर असिल वह नाग काले हैं ।
पिला कर दूध तुमने आसतीं के सांप पाले हैं ॥

धृतराष्ट—बेटा ईर्षा भाव को त्यागो । इसही में तुम्हारा कल्याण है

शेर—किसी से छीन लेते हैं किसी को ताज शाहाना ।
करम देते हैं सुख दुख ये कभी बिस्तर फकीराना ॥
किसी के धन के लेने से नहीं होता धनी कोई ।
तू मूरख बन रहा बेटा क्यों तूने आज पत खोई ॥
वह भ्राता भ्रात तेरे हैं तू पांचों का हुवा भ्राता ।
पिता यश ये मुहब्बत हो, सगी ज्यों भ्रात हो माता ॥
ये आधा राज पांडव का, धरा मुझ में अमानत है ॥
पड़ें पत्थर यह कहते क्या खयानत है खयानत है ।
ऐश आराम करने को, ये आधा राज क्या कम है ।
करो आनन्द महलों में हुवा बेटा यह क्या गम है ।

जो होता न्यायवेत्ता तू, तो किस्सा पाक कर देता।
मिला एक वस्त्र ही होता, तो आधा चाक कर देता॥

दुरयोधन—मौन धारन करता है।

धृतराष्ट—सैना पती।

सेनापती—श्री महाराज।

धृतराष्ट—जावो पांचों भाई युधिष्ठिर आदि को शीघ्र बुला कर लावो।

सेनापती—जो आज्ञा। (जाता है बुला कर लाता है)

(कौरवों का काना फूंसी करना पांडव का आना)

युधिष्ठिर—(चाचा के चरण छू कर) पिता के चरणों को प्रणाम।

धृतराष्ट—कल्यान हो कल्यान हो बेटा युधिष्ठिर जो इस समय मेरा भ्राता मौजूद नहीं है। परन्तु मैं तुम को अपना भाई पांडव के समान जानता हूं। इस लिये आधे राज करने का अधिकार देता हूं तुम को पांडव के नाम से पुकारता हूं। और आइन्दा सकल प्रजा को यही हुकम देता हूं। कि युधिष्ठिर आदि पांचो भ्राता को भ्रात पांडव के नाम से पुकारें। आधा २ राज करें।

दरबारी—श्री महाराज की जो आज्ञा।

धृतराष्ट—(ताजशाही उतार कर) आज ग्रहस्ताश्रम का त्याग करते हैं जिन दिक्षा लेने जाते हैं। (जाना)

दुरयोधन युधिष्टर आदि—ठहरो २ पिता जी ठहरो (कहते हुवे प्रस्थान॥

प्रथम परिच्छेद (बाब दूसरा १० दृश्य)

(पर्दा गोवरधन परवत)

(कृष्ण महाराज का गऊवें चराते नजर आना आंधी तूफान मेंह का बरसना बिजुली का चमकना)

प० ग्वाल०—हाय हाय मइया यह क्या विपत आई।

दू० ग्वाल०—दुहाई दुहाई कृष्ण महाराज दुहाई।

कृष्ण—क्या आफ़त आई।

ग्वालियों का—गाना—तर्ज रसिया।

चारों ओर यह हुवा अंधेरा यह क्या होगई बात।
आंधी आई जोर शोर से दिनकी होगई रात ॥ चारो० ॥
जमना का उमंड उमंड कर आवे हमरे सात।
बिजली तड़के मेघ बरसे डरपो हमरो गात ॥ चारो०
गोकुल में गौ डूबन लागीं रोवे हमरी मात।
अब हमरे जीवन की रक्षा तुमरे ही है हाथ ॥ चारो० ॥

(बारिश का बरसना बिजली का तड़कना चारों ओर तूफ़ान का नज्जारा एक ग्वाल का घबरा कर पैरों में आकर गिरना)

ग्वाल्या—(घबराकर) बचावो २ स्वामी प्राण बचावो।

शेर—भंवर से पार होंगे तो तुम्हारे ही सहारे हम।
लगावो एक ठोकर जा लगें फौरन किनारे हम ॥

यशोदा माई आती हैं

यशोदा—बेटा ! बेटा ! कृष्ण बेटा (गोद में लेना) आ, आ, आ माता की गोद में आ। तूफान से निजात पा (मुंह चूम कर) मुझको अपने मर्ण का दुख नहीं है। किन्तु बेटा तेरे दुख से दुखित हूं।

शेर—मेरी टूटी हुई आंसू का बस तुमही सहारा हो।
मेरे दुख के समन्दर का सिरफ तुमही किनारा हो ॥

कृष्ण—माता क्यों हिरास होती हो तो सुनो ॥ गाना० ॥

माता क्यों मनमें घबराओ:—

देव मई यह अतिशय देखूं; छिन एक मन समझाओ। माता० ॥
जितना बल हो सुर असुरनमें, सब मुझको दिखलाओ ॥ माता० ॥
गोवर्धन पर्वत को उठाऊं गोकुल वासी आओ ॥ माता० ॥
सबको सुख हो परबत नीचे, आओ, आओ धावो ॥ माता० ॥

कृष्ण महाराज का झपट कर पर्वत को उठालेना आवाज का होना गोकुलवासियों का नीचे पर्वतके आना देवों का आनकर प्रार्थना करना

गाना

गुन वरनन करें कहां तक तुमरे पारना जी । तुमरे पारनाजी ।
धन धन धन अपार माया । सूर वीर प्रभू पार न पाया ।
तन मन धन सब हमरा तुम पर वारनाजी ॥ गुन० ॥

पर्दे का आहिस्ता २ गिरना ड्रापसीन होता है

प्रथम परिच्छेद (३ बाब प्रथम दृश्य)

कंश का महल (देवी आती है)

देवी—कन्श सावधान रहो तेरा शत्रू बलवान है ।

कन्श—हैं । हैं । क्या तुम से भी अधिक बलवान है ।

देवी—(गाना) तर्ज—सदमे हैं यह जीते जी के वास्ते ।

शत्रू है बलवान राजा जान लो । लड़ना सनमुख तुम नहीं ये मानलो
डर दिखाया हमने नाना रूप से । मातही पाई घटाई शान लो ॥
तीन खण्ड में है नहीं कोई शूरमा, तोड़डाले जाके उसकी आनलो

देवी—राजन् हम आज्ञा चाहते हैं ।

कन्श--(मायूसी से) जाइये जाइये !

(देवी का जाना) कन्श का अफ़सोस व खौफ़जदा होकर बैठना सेनापति का आना

सेनापति—श्री महाराज गजब है । सितम है ।

कन्श—क्या है क्या हुवा ?

सेनापति—आयुध-शाला के द्वार पर तीन देव मई शास्त्र पैदा हुये हैं

कन्श—क्या शस्त्र पैदा हुये हैं। कुछ कहो तो।

सेनापति—श्रीमहाराज धनुष व नाग शय्या व संख दिव्यमई स्वयमेव उत्पन्न हुये हैं स्पर्श करना क्या सन्मुख जानाही महाल है जो साहस करके जाता है उसके सर पर काल है।

कन्श—क्या काल काल करते हो। चलो हम खुद चलते हैं (प्रस्ताम)

प्रथम परिच्छेद (२ बाब २ सीन)

आयुध शाला (कन्श देखने को आताहै)

कन्श—(आयुध शाला को सजाता है आवाज होती है आग व नाग दिखाई देते हैं) अरेरे यह क्या आफत आई। सेनापति सुनो।

सेनापति—श्री महाराज आज्ञा?

कंश—किसी निमित्त ज्ञानी को शीघ्र ही बुला कर लावो।

सैनाप०—श्री महाराज अभी बुला कर लाया। (जाना कंश का रंज करना)

कंश—हाय २ करूं तो क्या करूं। शत्रू का भय निश दिन लगा हुवाहै काल के समाचार कानों में गूंज रहे हैं। (रानी का आना)

शेर—न वह जिस्म रहा न वह गात रही न वो जात बुलंद सफात रही।
न वह दिन ही रहा न वह रात रही न वह पहली सी कोई बात रही।

रानी कंश—स्वामी। स्वामी। यह क्या कह रहे हो। रानी आती है।

कंश—(आंख में आसूं आती है) प्रिय कुछ नहीं।

रानी—नहीं नहीं कुछ तो अवश्य है।

कंश—प्रिय सुनो।

गाना—सीधा करूं मैं काम जो उलटा हुआ देखूं।
फूटे हैं भाग तेरे ये पलटा हुआ देखूं॥
शत्रू है सरपै जीने की उम्मेद छोड़ दे।
आता है काल गूंजता झपटा हुआ देखूं॥ सीधा०

स्वप्ना जो हुआ रात को सीने पै है शत्रू ।
पीता है खून नाग हा लिपटा हुआ देखूं ॥ सीधा० ॥
करने के जो थे काम वह सब कर चुका हूं मैं ।
तेरे सुहाग में पिये खटका हुआ देखूं ॥ सीधा० ॥

रानी----सुहाग सुहाग हाय २ फूटे मेरे भाग । गाना ।

तर्ज० तोरी छल बल है न्यारी तोरी कल बल है न्यारी करो० ॥

गाना-कैसे फूटे हैं भाग, हाय हाय सुहाग, लागी कर्मों में आग,
हाय दुख भारी । सुख हारी दुख भारी कैसे० ।
हाय हाय सैंय्यां वारूं मैं प्यारी जान तुमरे दरससेही जीते
हैं प्रान अजी छोडो ये बात । मैं हूं तुमरेही साथ । मारो शत्रू
के लात, अजी वाह वा वाह । वाह वाह वा । वाह वा वा । कैसे०

सेनापती--श्री महाराज निमित्त ज्ञानी आते हैं ।

कंश—अच्छा आने दो (निमित्त ज्ञानी का आना कंश हाथ जोड़कर)

कंश—महाराज के चरणों को प्रणाम ।

निमित्त--आनन्द रहो । राजन कैसे याद किया ।

कंश—श्रीमहाराज । मेरी आयुधशाला नाग सैय्या । धनुष शंख तीन
दिव्य मई शस्त्र स्वमेव उत्पन्न हुये हैं । उन को कौन जीतेगा ।

निमित्त ज्ञानी-(कुछ सोच कर) श्री महाराज उन को आप का शत्रू
ही जीतेगा और वही जीत सकता है ।

कंश—मेरा शत्रू

निमित्त ज्ञानी--जी हां । आप का शत्रू ।

कन्श--और वह मथुरा में आकर जीतेगा ।

निमित्त--(सोच कर) जी हां मथुरा में आकर ही जीतेगा ।

कन्श—(हाथ मल कर) हाय हाय यह क्या ।

निमित्त—बस राजन् हम आज्ञा चाहते हैं ।

कंश—आपकी इच्छा (निमित्त ज्ञानी का प्रस्थान)

कन्श—शत्रू को कैसे जीतूं क्या कारण बनाऊं । क्या खा कर मर जाऊं (सोचकर) बस बस यही करूं । द्वारपाल ! द्वारपाल !!

द्वारपाल—श्री महाराज !

कन्श—देखो मंत्री से कह आओ कि जो वीर पुरुष मथुरा में आकर नाग सैय्या, व धनुष तथा शंख को जीतेगा मैं उस को अपनी पुत्री व्याहूंगा । जगह २ दूत पठावे विलम्ब न लगावे ।

दूत—श्री महाराज अभी कह आता हूं । जाना ।

कन्श—मेरा शत्रु इस घोषणा को सुन कर अवश्य आयेगा । बस मेरे इस खंजर खूंख्वार का मजा पायेगा ।

शेर—दुनिया का उलटा हाल है, उलटी ही यांकी चाल है ।
नेकी से बनता काम कब, मकरो दगाही ढाल है ॥ (प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (२ बाब २ सीन)

(कृष्ण महाराज का गउवे चराते नजर आना बलदेव जी का हस्तप्रहार की कलाओं का सिखाना)

बलदेव—(कृष्ण से) भाई साहब ! क्या निशदिन गउवों काही ध्यान है । या कुछ हस्तप्रहार का भी ज्ञान है ।

कृष्ण—हस्त प्रहार ?

शेर—ग्वालिये सुत को कटारी बान से क्या काम है ।
देख कर मोहित हुवा मन आप का क्या नाम है ॥ शेर—

बलदेव—मेरो मन भी कह रहा है आज तू महमान हो ।
गोवरधन परवत उठाया आप अति बलवान हो ॥
कोह को कर से उठाना ? ग्वालियों का काम है ।
तीन खंड मालक बनो, कृष्ण आप काही नाम है ॥

कृष्ण—अवश्य ये सत्य है । परन्तु आप भूपाल ! और मैं एक गोकुल का ग्वाल ? मेरे बड़े सौभाग्य का समय है जो आप को मुझ तुच्छ

ग्वाल के यहां महमान होने का विचार है । चलिये २ ब्यालू का समय है चरण रज से पवित्र कीजे ।

बलदेवजी—मैं आप के संग अवश्य चलूंगा परन्तु प्रथम आप एक तीर का निशाना टीले पर लगाकर दिखायें । और देखो सुनो ?

शेर—कोह में तीर मारो तीर का कोना न मुड़ जाये ।
मगर टीला उखड़ कर कोह से आसमान उड़ जाये ॥

कृष्ण—परन्तु मेरे पास तीर कमान कहां ।

बलदेव—लो मैं तीर कमान देता हूं ।

कृष्ण—मैं इसे चलाना नहीं जानता हूं ?

बलदेवजी—बायें हाथ में कमान दायें हाथ में तीर चढ़ाकर मारने का ध्यान ।

कृष्ण—(तीर कमान लेकर) बहुत अच्छा ऐसाही होगा ।

तीर को कृष्ण महाराज टीले पर मारते हैं टीला पहाड़ से उखड़ कर आसमान को उड़ता है भयानक आवाज होती है (यशोदा माई आती है ।

यशोदा—(कृष्ण से) बेटा यह कैसी आवाज ।

कृष्ण—कुछ नहीं माता एक टीले को तीर का निशाना बनाया था ।

यशोदा—बेटा मैं तेरे कौतूहल से बहुत डरती हूं । और यह महान पुरुष तुम्हारे साथ कौन है ।

कृष्ण—माता सुनो ।

शेर—आज मुझ को अपने घर सौभाग्य का अभिमान है ।
देख लो सज्जन पुरुष ये हमरे यां महमान हैं ॥

वार्ता—माता जी भोजन तो तैयार होगया होगा ।

यशोदा—नहीं बेटा ।

कृष्ण—कारण ?

यशोदा—यही कि मथुरा से भोजन की सामग्री संझा समय आयेगी ।

कृष्ण—हाय ! हाय ! (हाथ मलकर) जंगल वीरान में महमान का क्या सनमान करूं या विष खाकर प्राण त्याग करूं । हाय अपमान । मेरा अपमान सामने महमान । गाना० ।

भोजन नहीं मिलता समय पर क्या मेरी तकदीर है ।
चोला छुट कर भस्म हो यह क्या कोई तदबीर है ।
मात कुल को देखकर लज्जा ये आती है मुझे ।
किस खता पै हूं मैं मुजरिम क्या मेरी तकसीर है ॥ भोज० ॥
जो मेरा देख बदन फिर पांव में देखे पदम ।
कोह को समझू हूं राई, फिर भी मन दलगीर है ॥ भोजन० ॥

यशोदा—(शरमिन्दा होकर कानों पे हाथ धरती चली जाती है)

कृष्ण—भाई साहिब क्षमा क्षमा मुझ अभागी पर क्षमा ।

(हाथ जोड़ते हैं बलदेव जी हाथ पकड़ कर कोली भरलेते हैं)

बलदेव— गाना० तर्ज । जोगिया ।

कछु सोच करो मत भाई, हम तुम दोनों मा जाई ।
मैं तुमरो महमान नहीं हूं, मन को लो समझाई ॥
गुरु वासदेव पिता हमरो है, तुम लघु भ्राता भाई ॥ कुछ ॥
यादव वंशी कुल है हमरो, देवकी तुमरी माई ।
कन्श के भय से तुमको भ्राता, दीना यां पहुंचाई ॥ कुछ ॥
प्रेम वार्ता कर कर बालो, समझो यशोदा माई ।
तरुण समय जब तक तुम्हरी हो, भेद खुले ना राई ॥ कुछ० ॥

कृष्ण=(मुह देख कर) भ्राता ! भ्राता ! मेरे भ्राता हे प्रभू मनकी शंका आज दूर हुई (यशोदा आती है)

यशोदा=लो बेटा भोजन की सामग्री दूसरे अस्थान से लाई हूं ।

कृष्ण=माता मेरे मुंहसे जो कटुक वचन निकले हैं । उनका प्रायश्चित दीजिये ।

यशोदा—बेटा मेरा मन तुम से अधिक प्रसन्न है चलिये चलिये महमान का भोजन जिमाइये (प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (३ डाव ४ सीन)

दरबार दुर्योधन

दुर्योधन व भीषम पितामह मय पांचो पांडवा व विदुरके दिखाई देना

दुरयोधन--(भीषम पिता से) बाबा जी क्या यही न्याय है । कि एक भाग पांच को और एक भाग सौ को ।

भीषमपि०—अवश्य यही न्याय है । क्योंकि एक भाग को तुम्हारे पिता धृतराष्ट्र को और दूसरे भाग का पांडव को । परन्तु अब पांडव के पांच पुत्रों को आधे राज पर और धृतराष्ट्र के सौ १०० पुत्रों को आध राज पर अधिकार हुवा ।

दुरयोधन—अधिकार । यह मेरी समझ में नहीं आती है ।

भीषमपि०--दुरयोधन तेरा कहां ध्यान है । यह शास्त्र का प्रमाण है । सुनो

दोहा-जैसे मोहनी कर्म के, भेद कहे दो जान ।
तीन रूप समयक्त है, पचिस चारित्र मान ॥

कवित्त-पच्चीस चरित्र मान अरे दुरयोधन ज्ञाता ।
करो मान सनमान, तेरे जो पांचों भ्राता ॥
पिता तुम्हारे धर्म्म रूप थे ज्ञानी माता ।
जो कुछ होगया न्याय, करो तुम उस में साता ॥

वार्ता—बेटा सुधार संतोषी होना चाहिये ।

दुरयोधन--सन्तोष ।

शेर—राजा और विद्यार्थी रक्खें यदी संतोष ।
निश दिन घटता ही रहे धन विद्या का कोष ॥

भीषमपि०--फिर तू क्या चाहता है

दुरयोधन--राज्य के १०५ भाग । यदि ऐसा ना होगा तो जिस की तलवार में जोर होगा । राज्य पर उसका अधिकार होगा ।

शेर—देर अब हरगिज न होगी जंग के ऐलान में ।
फ़ैसला होगा ये बस तलवार के मैदान में ॥

भीम—क्रोध में होकर।

शेर– रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जाने के बाद।
आदमी बनता है लाखों ठोकरें खाने के बाद॥
कौरवों परपंच लख कर भीम के मन खार है।
सौ के सौ की जान लेना एक गदा की मार है॥
आवो मेरे सामने ऐलान किस का नाम है। (गदा घुमा कर)
मारना मरना यही बस क्षत्रियों का काम है॥

युधिष्टिर—शांत भीम शांत।

नकुल-सहदेव--पांडव की देख अब तलवार कैसी शान की।
ठोकरें खाता फिरेगा खोपड़ा मैदान की॥

अर्जुन—एक मेरा तीर ले ले कौरवों के मान को।
देखतेही देखते अब सौ की सौ लूं जान को॥

विदुर—अर्जुन यह क्या कहते हो। अय दुरयोधन तेरी बुद्धि पर शोक है

लावनी—न्याय अन्याय न जाना तूने कैसा तू अभिमानी है।
भाई भाई से करे कुटिलता कैसा तू अज्ञानी है॥
धन योवन क्षण भंगुर जग में कहां ओस का पानी है।
धूप पड़े उड़ जाये क्षिणक में ऐसी ये जिन्दगानी है॥
प्रेम भाव हो सब जीवन से द्वेष भाव दुख दानी है।
भ्रात प्रेम दुरयोधन भूला ये क्या मन में ठानी है॥

दुरयोधन—(परपंच से)। अहं हं। क्या मेरे मन में भाइयो प्रेम नहीं है। परन्तु।

शेर—शर्म कुछ अच्छी नहीं थी परस्पर व्यवहार में।
वैसे तो मैं जानता हूं क्या भरा संसार में॥
राज्य भी आधा देऊं और लाखा मंडप साथ में।
भाइयों से प्रेम तोड़ूं आयगा क्या हाथ में॥

वार्ता बस आज पांचो भाई युधिष्टिर आदि को आधे राज्य पर अधिकार होगा। और लाखा मंडप जिस को दुरयोधन ने एक लाख रुपये से तैय्यार कराया है। वह भी मैंने अपने भाई पांडव को दिया। सुखसे निवास करें। मैं इसही में प्रसन्न हूं

भीषमपि०—शाहबाश ! बेटा शाहबाश । सज्जन पुरषों का यही कार्य्य होता है । (सभा बिसरजन होती है)

(कुछ समय में विदुर तथा युधिष्ठिर आदि आते हैं)

विदुर—बेटा युधिष्ठिर हमको आश्चर्य है कि दुरयोधन ने लाखा भवन का एक दम तुम को कैसे अधिकार दिया ।

युधिष्ठिर—पिता जी मुझ को भी लाखा भवन लेकर आश्चर्य होता है ।

विदुर—अवश्य बेटा इस में दुरयोधन की माया चारी टपकती है । दुरयोधन की मीठी बातें सुन कर विश्वास न लाना । क्योंकि वह तुम्हारा जानी शत्रू है । नीति का वाक्य है ।

श्लोक=दुरजने प्रिय वादीच नैत विश्वास कारणम् ।
मधु तिष्ठत जिह्वाग्रे, हृदय हलाहल विशम् ॥

चौपाई—बोलत मधुर वचन जिम मोरा । खाय मार अहि हृदय कठोरा ॥
येही दुरजन केर स्वभाऊ । भूल मीत न करिये काहू ॥
दुरयोधन की माया चारी । महल दियो कहां बात विचारी ॥
यामें शयन कबहुं नहीं कीजे । शत्रु भवन यह मन धर लीजे ॥

आर्जुन—पूज्य पिता जी हम शत्रू भवन से खबरदार रहेंगे ।

(पांडव का प्रस्थान)

विदुर—गाना—खुदाऊं एक सुरंग जाकर अभी मैं ।
करूं जलपान और खाना तभी मैं ॥
कोई गर हो मुसीबत काम आवे । सुरंग का रास्ता लें भाग जावें ।
यह दुरयोधन महा छल का भरा है । कोई परपंच अब इसने रचा है ॥
न हो इसकी खबर ऐसी बनाऊं । मसां भूमी से महलों तक खुदाऊं ॥

(प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (३ ड्राव पांचवां दृश्य)

(पर्दा जंगल)

(कृष्ण महाराज का गउवें चराते दिखाई देना राजा भानुकुंवर का नाग सय्या व धनुष जीतने को मथुरा जाते दिखाई देना)

राजा भानु०—(सैना पती से) वलवीर सिंह !

वलवीरसिंह—श्री महाराज !

राजा भा०--हम को तृष्णा लगी है सामने की वावड़ी से पानी लावो।

वलवीरसिंह--श्री महाराज अभी लाया।

कृष्ण--(छिपे हुवे मुसकराते हैं) वावड़ी का जल सुखाता हूं। राजन् लोगों को नीचा दिखाता हूं (कुछ गुनगुना कर फूक मारते हैं जल सूखता है।)

वलवीरसिंह--हैं हैं यह क्या अभी तो चश्मा पुर आब था ॥

शेर– सामनेही सामने जल इस में मैं पाता नहीं।
दूर से देखा चमकता था कहा जाता नहीं।
ताजुब तो यह है कि पानी जो कि अथाह भरा हुवा था। एक दम कहां चला गया ! (अफसोस करते हुवे वापिस आता है)

वलवीरसिंह—श्री महाराज वावड़ी का अथाह जल देखते २ ही सूखगया

राजा०—हैं यह क्या ?

वलवीरसिंह—दोहा- जैसे सम्यक होतही मिथ्या मति हो नाश।
ऐसे जल एक दम गया, भागा आया पास ॥

लावनी—भागा आया पास दास ये राजन मन में हुवा खयाल।
छिनभंगुर जग माया लख के वढ़ कर उससे हुवा मलाल ॥
मानो जीव कोई सान्सारिक फंसा हुवा था जर और माल
छिन एक में परलोक सिधारा जल का ऐसा हुवा अहवाल

राजा--किसी को वुला कर पूछिये।

वलवीरसिंह--श्री महाराज अभी वुलाता हूं।

राजा--और सुनो चलो हमभी वावड़ी के पास चलते हैं।

(राजा का जाना वावड़ी को देख कर)

राजा—शेर—सूखी ऐसी वावड़ी वून्द रही ना एक।
जल बिन नां वचती नहीं राख प्रभू मो टेक ॥

राजा—(वार्ता) अय ग्वालो हमको पानी की प्राप्ती का उपाय वतावो

ग्वाल्या—श्रीमहाराज आज पानी मिलना असम्भव है।
राजा—अरर ये आज कैसी ? ठीक २ हाल बयान करो।
ग्वाल्या दो०—थोड़ेही में जान लो राजा हमरी बात।
बिना दिये श्री कृष्ण के पानी लगे न हात॥
पानी लगे ना हाथ तुम्हारे राजा हमरी लो मानो।
दस दस बीस बीस कोसन में पानी मिले ना जानो॥
जैसे रुलतां फिरे जगत में मिथ्या दृष्टी पहिचानो।
जल बिन फिरो भटकते ऐसे राजन दिल में यह ठानो॥
राजा—फिर हमको क्या करना चाहिए।
ग्वाल्या—श्रीकृष्ण महाराज से जलकी याचना।
राजा—वह कहां है।
ग्वाल्या—हम बुलाए लाते हैं।

कृष्ण महाराज को बुलाकर लाना राजा का पैर में पद्म देख कर ताज्जुब में होकर कहना

राजा—(मुह पर हाथ रखकर) ग्वाल ! ग्वाल ! तुम कैसे ग्वाल !
दोहा—राजन् के प्रतिपाल हो, झूठ कहूं ना लेश।
ग्वाल नहीं भूपाल हो, बदला कैसे भेष॥

लावनी

बदला कैसे भेस जरा तुम हमको ए जितला देना।
गर कुछ भय हो किसी तरह का, कुंवर हमें बतला देना॥
सैना चले यह संग तुम्हारे शत्रू से बदला लेना।
इच्छा लगी है जलकी इनको जल इनको पिलवा देना॥

कृष्ण महाराज को हथेली बजाना पर्दे का फटना यकायक चारों ओर से जल धारा का गिरना

राजा—धन्य है। धन्य है। कृष्ण महाराज तुम्हारी लीला को धन्य है।

कृष्ण--जाते हो किस देश को, राजन क्या है नाम ।
सेना संग क्यों लेचले, क्या है तुमारा काम ॥
राजा भानुकुवंर--नाम मेरा भानुकुवंर, मुथुराको हम जात ।
नाग धनुष को साधवे चलो हमारे साथ ॥
कृष्ण=चलिए चलिए हम भी आप के संग चलते हैं । (प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद ३ड्राप ६ सीन मथुरा नगरी

नागशय्या धनुष को जीतते दिखाई देन कृष्ण महाराज का भानुकुवंर के साथ आना

मनादी कुनिन्दा—मनादी है । मनादी है हमारे महाराज का हुकम है कि जो नाग सय्या व धनुष को जीतेगा । तथा नाग सय्या पर वैठ कर संख वजाएगा वो मेरी पुत्री व्याहेगा । सुन लो साहिवो मनादी है । मनादी है ।

एक राजा का नागसय्या के पास जाना भय खाकर आना आवाज का होना नाग व आगका दिखाई देना

राजा—हाय हाय मेरी मैया । यह कैसी नाग सय्या ।
गाना–तर्ज—हुए जो पुत्र दशरथ के मुकद्दर हो तो ऐसा हो० ।
खाया हा नाग सय्याने काटने नाग आया है ।
वचे इसके जो फन्दे से पुनर भव उसने पाया है ॥
ये कैसी आग थी भड़की मानो विजली सी यह तड़की ।
जिगर दिल होगया वेकल, गोया कोई तीर खाया है ॥ खाया०॥
जो छत्री हो वशर दाना पास इसके नहीं जाना ।
नहीं यह नाग सय्या है काल मुह वाके आया है ॥ खाया० ॥
कृष्ण--क्यों क्यों राजन, क्यों घवराते हो ।
दूसरा--हैं हैं ऐसी क्या घवराहट है । लो मैं नाग सैया पर सयन करता हूं । (जाना आवाज का होना सांप विच्छू व आग का दिखाई देना) अर्रर भय्या भय्या । यह कैसी नाग सय्या ।

गाना

भागो भागो भागो यारो क्यों करते हो देर ।
सुनलो भय्या कैसी सैया मार मार करे ढेर ॥
मानो मानो हमरी मानो करो न हेरा फेर ।
मानुष की ताक़तही क्या है इससे डरता शेर ।
खाया हो नाग है । प्रलय की आग है । यां जां की लाग है । फूटेगा भाग है । मानो मानो हमरी मानो वरना लेगा घेर ॥ भागो० ॥

प० राजा=नाग सैया का जीतना महाल है ।

दू०--बेशक जान का जंजाल है ।

ती०--क्या करना चाहिए ।

चौ०—संतोष रखिये देखिये क्या होता है ।

कृष्ण--राजन् क्या सोच रहे हो अपना २ बल दिखावो ।

प० राजा--यदि कुछ वीरता रखते हो । तो तुमही चढ़ा दिखावो ।

कृष्ण—भानु कुवंर से राजन् मुझको आज्ञा दीजिये ।

गाना

अभी जीतूं मैं जाकर नाग सय्या । डरे क्षत्री सभी कह कहके भय्य ।
शंख सिंहनाद को मुह से बजाऊं । चढ़ाऊंगा धनुष नहीं देर लाऊं ॥
अगर जीतूं नहीं कायर कहाऊं । कसम खाताहूं मैं नहीं मुह दिखाऊं ।

भानुकुवंर—आप अपना बल दिखाइये ।

कृष्ण—णमोकार मन्त्र पढ़कर । (एक दम बैठना है)

बोल श्रीजिनेन्द्र देव की जय

कृष्ण महाराज नाग शय्या पर बैठ शंख बजाते हैं नाग शय्या आसमान को उड़ा कर लेजाती है कंश आता है

कन्श—हैं हैं यह क्या नाग शय्या को जीतने वाला कहां गया । शंख का शब्द किसने किया कहां गया ।

शेर—कहां गया और क्या हुवा हमको बतावो तो सही ।
कन्या मैं देता उसे दिल में तमन्ना थी यही ।

राजा—जीतने वाला तो शय्या ले उड़ा आसमान को।
कोशिश सब कुछ कर चुके, लेकिन सहा अपमान को॥

कन्श—गाना—कैसा मिल मिल सभों ने ये धोका दिया।
सय्याजीतन वाले को छिपादी लिया॥ कैसा०॥
मुझ से बचकर कहां जायेगा आज वह।
धोका देने से नहीं बाज आयेगा वह।
सुनो सैना पती तुमने ये क्या किया॥ कैसा०॥

सेनापति—श्री महाराज नाग शय्या जीतनेवाला गोकुल का ग्वाल। यशोदा का लाल है। परन्तु उससे विजय पाना महाल है।

कन्श—ग्वाल ग्वाल या कोई भूपाल।

सेनापति—श्री महाराज गोकुल का ग्वाल। मेरे वचन प्रमाण कीजिये।

कन्श—सुनो।

दोहा—गोकुल में जाकर अभी कहदो ये समझाय।
कालोदधी के नाग से सहस्र पंक दें ल्याय॥
सहस्र पंक आवें नहीं गोकुल दो मरवाय।
जन बचा गोकुल भवन कोल्हू दो पिलवाये॥

सैना—श्री महाराज जो आज्ञा। (प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद ३ द्वार (सातवां दृश्य)

(गोकुल का जंगल)

(कृष्ण महाराज का वंशी बजाते नजर आना ग्वालियों का खुश होकर गाना)

ग्वालिये—गाना—तर्ज बिरज की होली।
ये क्या वंशी बजाई। प्रेम रस मन में समाई। ये क्या०।
कुमत निवारण। शिव सुख कारण कर्म्मन देत दुहाई।
कब अवसर मिलें कर्म्म कटें ये चिदानन्द सुखदाई।
रमूं कब शिव प्रिय जाई। ये क्या वंशी बजाई॥
मन मथ त्यागो कुमता भागो। मोह की लो ठकुराई॥

सत संगत हो भव भव मेंरी जबलों न शिवपुर जाई।
घटा वैराग्य की छाई। ये क्या वंशी० ॥ (सेनापती का प्रवेश)

सेनापती—दोहा—गोकुल में यदि कुशल तुम चाहो बाल गोपाल।
कालोदधि से सहस्र पंक दे आओ भूपाल ॥
दे आओ भूपाल हुवा है हुकम तुम्हें मैं समझाऊं।
गर कुछ हुकम अदूली होगी, गोकुल कोल्हू पिलवाऊं ॥
नाग कालया जीतो तो इनाम बहुत सा दिलवाऊं।
बोलो बोलो जल्दी बोलो नृप से मैं कह कर आऊं ॥

ग्वालिये--दोहा—गोकुल के हम ग्वाल हैं जीतें कैसे नाग।
चार चार जोजन तलक निकले मुह से आग ॥
निकले मुह से आग कालिया नाग से क्यों मरवाते हो।
न्याय अन्याय समझ लख कहिये ऐसा क्यों फरमाते हो ॥
प्रजा हैं उनकी ग्वाल बाल सब हमको क्यों डरपाते हो।
हंसी न कीजे सुत अपनों से हम को क्यों भरमाते हो ॥

सेनापति—लायाहूं यह हुकम मैं देताहूं अब हाल।
लो इसको देखो पढ़ो सर पर आया काल ॥ देना० ॥
सर पर आया काल सैना ले लड़ने को मैं आता हूं।
सहस्र पंक दो ल्याय नहीं तो कोल्हू में पिलवाता हूं।
या सन्मुख हो युद्ध करो अब तुम्हें यही समझाता हूं।
कुशल इसी में पंक ल्याय दो तुम्हें यही जितलाताहूं ॥

वार्ता-बस इसी में कुशल है शीघ्रही सहस्र पंक लाकर राजा के पास पहुंचावो विलम्भ न लगावो।

ग्वाल—अच्छा महाराज दो दिन की आज्ञा चाहते हैं।

सेनापति--दो दिन के अन्दर राज दरबार में लाकर हाजिर करो।

(सेनापती का प्रस्थान)

ग्वालयों का श्रीकृष्ण महाराज से प्रार्थना करना

गाना कव्वाली

नहीं मालूम मनमें क्या हमें राजा सताता है।
हुवा अपराध क्या हमसे नहीं कुछ ये बताता है ॥
करे अन्याय राजा कन्श को क्यों द्वेष है हम से।
डरे हम मार मारने से कमल हमसे मंगाता है ॥ नहीं० ॥
कहें जो नहीं कमल लावो तो गोकुल कोल्हू पिलवाऊं।
जरासी बात पर कोल्हू की क्यों धमकी दिखाता है ॥ नहीं० ॥
जहर खा खा के मरजायें कहां जाकर के छिप जायें।
शरण श्रीकृष्ण को लेलो यही बस दिलमें आता है ॥ नहीं० ॥

(श्रीमहाराज कृष्ण के चरणों को छू छू कर गाना)

गाना—तर्ज-मित्रो वस्त्र स्वदेशी पहनो इस में लाभ बड़ा भारी।
लेली लेली हम दीनन ने प्रभू जी शरण तिहारी आज। शरण तिहारी आज। प्रभू जी शरण तिहारी आज० ॥ लेली०। गोवरधन कांधे पै उठाया। देवमई उपसर्ग हटाया। (चलती कह कर) आओ हमरे काज। लेली०। गोकुल के प्रभू तुम रखवारी। हम सेवक प्रभू आज्ञा कारी। (चलती में कहकर) रखो रखो हमारी लाज ॥ लेली० ॥ हम दीनन ने प्रभू जी शरण तिहारी आज॥ पंक लाय मथुराले चालो कालो नाग निरमद कर डालो। (चलती) प्रभूजी बना रहे सरताज ॥ लेली० ॥

कृष्ण—शंका दूर करो सर्व कार्य्य सिद्ध होगा।

ग्वाल बाल—बोल श्री कृष्ण महाराज की जै।

कृष्ण—देखो हम अभी कालोदधि में घुस कर सहस्र पंक लाय देते हैं।

(कृष्ण महाराज का कालोदधि में घुसना कालिया नाग का क्रोध से आना महायुद्ध का होना नाग निरमद होना कृष्ण महाराज कमल तोड़ना आवाज का होना सांप के फनो पर बैठ कर महाराज का वंशी वजाना।

(पर्दे का गिरना)

प्रथम परिच्छेद (३ चाब ८ सीन)

(कन्श का दर्बार)

(रामशगरियों का नाचकर गाना)

गाना-जग दाता पितु मात हमारा, जग दाता हो, सुख दाता हो, जगदाता
काम क्रोध मद त्याग ईर्षा तुझसे ध्यान लगावें। आशा पूरण हो,
हम सबकी चरणन शीश निवावें। जगदाता० ॥
सच्चे सेवक हैं हम स्वामी मनोकामना पावें। वेकल पल पल छिन
छिन निश दिन तेरो ही गुण गावें। नेहा लगावें। तेरोही गुणगावें
गुण लख हिया हरषावें। जग दाता० ॥

द्वारपाल—जिनेन्द्रदेव रक्षा करें हरें शोक संताप।
सूरज चन्दा चौगुना दिन २ बढ़े प्रताप ॥
महाराज धिराज की जै हो
सहस्र् पंक करमे लिये ठाढ़े गोकुल ग्वाल।
हुक्म होय हाजिर करूं आज्ञा हो भूपाल ॥

कन्श—क्या सहस्र् पंक तुमने अपनी आंख से देखा।

द्वारपाल—जी हां इस दास ने देखा।

कन्श—(हाथ मल कर) हा! आश्चर्य है कि यह कौन पुरुष बलवान है
जिसको यम लोक जाने का ध्यान है खैर हाजिर करो।

द्वारपाल—श्री महाराज जो आज्ञा।

(ग्वाल बाल का आकर कृष्ण महाराज की प्रार्थना करना कंश का क्रोधित होना)

तर्ज रसिया—रावण की बराबर दुनियां में योधा नहीं दीखे कोय।
गाना—टेर सुनी प्रभू दीनन की प्रभू दीना हमें बचाये। दीना हमें बचाये
स्वामी जी दीना हमें बचाये।
सहस्र् पंक गर हम नहीं लाते। गोकुल को कोल्हू पिलवाते।
पंक लाने की ताकत हमरी भुजा में दीनी आये० ॥ टेर सुनो।

हम सेवक हैं सुन त्रिपुरारी। कृपा हुई आये कुञ्जविहारी॥ तुमरी रज चरनन सिर लाये। टेर सुनी प्रभु दीनन की प्रभु दीना हमे बचाये०। गोकुल वासी प्रभू नहीं भूलें। देख देख दर्शन मन फूलें। हमरो काज किया प्रभू आये। टेर सुनी प्रभु दीनन की प्रभु दीना हमें बचाये।

कंश—क्या बक रहे हो किसका गुन गा रहे हो। किस को सिर निवा रहे हो

ग्वालवाल--श्री महाराज सिर तो आपको ही निवा रहे हैं। पर·····न्तु

कन्श—शेर परन्तु जान लो मन में कि अब गोकुल दहन होगा।
कहीं लाशा पड़ा होगा कहीं मतरूक तन होगा।
जीव आत्मा यम लोक को राहे वतन होगा।
तो फिर प्रभू तुम्हारा देखें क्या मनमें मगन होगा॥

ग्वाल्या—नरेन्द्रनाथ हमारा क्या अपराध है। जो हम दीन दरिद्रों से वाद विवाद है।

कन्श—यदि तुम लोग कुशल चाहते हो तो सच २ बयान करो वरना यम लोक जानेका ध्यान करो।

ग्वाल्या—श्रीमान नरेश सेवकों के जो बचन होंगे वह सत्य होंगे।

कन्श—सत्य बयान करो।

शेर—गोबरधन पर्वत उठाया कौन वह इन्सान है।
सांड को निरमद करा वह नर है या हैवान है॥
नाग सय्या संख आदि जीतने का ध्यान है।
कालोदधि से पंक लाने का किसे अभिमान है॥

ग्वाल्या--शेर-कोह को करसे उठाया मिल के सब ने ग्वाल वाल।
जमना के ढिग सांड को हमने भगाया पाल पाल॥
नाग सय्या जीतने वाला नहीं भूपाल लाल।
कालोदधि में घुस के हम लाए बचाया जान माल॥

कन्श—नहीं हरगिज नहीं ये अमर महाल है।

ग्वाल्या—गाना—अमरे महाल को भी मुमकिन है कर दिखाना।
मुशकिल हुवा न कुछ भी काले से पंक लाना॥
चाहे तो एक दम में ये कूद जा समन्दर,
दुशवार कुछ नहीं है पर्वत का भी हिलाना,
अमरे महाल को भी मुमकिन है कर दिखाना,
चाहे तो शेर नर से कुश्ती लड़े ये वनमें,
हाथी को इस के आगे गरदन पड़े झुकाना॥
लेकिन जो बा खबर हैं ताकत से अपने भाई,
और ढूंढ़ते नहीं हैं तकदीर का बहाना,
अपने पै हो भरोसा और आतमा अभय हो,
बुद्धि व बल दया का तुझ में भरा खज़ाना॥ अमरे०॥

कन्श—शेर-शत्रू को पास रख कर कब तक छिपाओगे तुम।
हम भी तो देखें बातें कबतक बनावोगे तुम।
आओ मल्ल युद्ध में तुम गोकुल के ग्वाल देखूं।
परमात्मा बन आओ अमरे महाल देखूं॥
तुम को हुक्म होता है कि आज के दिन मल्ल अखाड़े में आओ अपना २ बल दिखावो।

ग्वालबाल--मौन धारण करते हैं।

सेनापति--जाओ जाओ अपना अपना बल दिखाओ। —(प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (३ ड्राप ६ सीन)

(पर्दा गोकुल)

(गोकुल की गोपियों का गाते नजर आना कृष्ण का मुसकराना)

ग्वालबाल--गाना—तर्ज जवानी नहीं बस में॥
भय्या जाने, हमें क्यों सतावे, बिना कुछ किये हम को सूली चढ़ावे, भय्या जाने रे नहीं कुछ बतावे॥ भय्या जानेरे हमें क्यों सतावे, हमें देख कर तीर आंखों में रोशन। भय्या जाने रे आंखों में चलावे

हुवा हुक्म हम को बजालाये लेकिन। भय्या जानेरे मिट्टी में मिलावें०॥भ०
मल्ल युद्ध का क्यों हुवा हुक्म हमको, भय्या जानेरे, फितने क्यों ॥
जगावे ॥ भय्या ॥ ८ ॥
नहीं न्याय से काम लेता है पापी, भय्या जानेरे, सूली क्यों
दिखावे ॥ भय्या० ॥

ग्वाल--रहना नहीं पसन्द है गोकुल छोड़ो आज ।
जीना है मुशकिल यहां सर पर है यमराज ।

यशोदा—मेरी समझ में भी यही आती है ।

ग्वाल--(कृष्ण महाराज से) प्रभू आज्ञा चाहते हैं सुनो किसी कवि ने कहा है ॥

अन्यायी राजा तजो, तजो स्वार्थी यार, ।
निरमोही माता तजो, तजो निरलज्जी नार ॥
तजो निरलज्जी नार तजो सन्यासी कामी, नौकर नमकहराम तजो अन्याई स्वामी ॥ गुरू लालची तजो तजो चेला अलसेठा । पिता अधर्म्मी तजो तजो नालायक बेटा ॥

कृष्ण —क्यों घबरा रहे हो सुनो ।

॥ गाना ॥

तर्ज—काकुल की तरह आज क्यों बल खाये हुवे हो ।
गोकुल के ग्वाल आज क्यों घबराये हुवे हो ।
कुमला रहा है फूल क्यों गम खाये हुवे हो ॥ गोकुल० ॥
है श्याम वरण मेरा मैं हूं श्याम बिहारी ।
सीने पै जाके शत्रु के अब मारूं कटारी ।
पात्रों में पद्म मेरे मुझे कहते हैं मुरारी ॥
और मेरेही दम खम पै तुम इतराये हुये हो ।
गोकुल के ग्वाल आज क्यों घबराये हुये हो ।
तूफान से बचाया कोह कांधे पै उठाया ।
जा बैठा नाग सय्या पै और संख बजाया ।
ताकत को मेरी देख के वो कंश लजाया ।
कायर है कन्स जिसका तुम भय खाये हुये हो ॥ गोकुलके० ।

मल्लों को मैं मल्ल युद्ध में यमलोक पठाऊं ।
राजा के प्राण लेके मैं सैना को भगाऊं ॥ गो० ॥
रण भूमि में जाकरके मैं विद्या को जगाऊं ।
मारूं उन्हों को जिन के तुम लरजाये हुये हो ॥
गोकुलसे प्रेम प्रेमी समझताहूं मैं सब को ।
गर अब न काम आया तो आऊंगा फिर कबको ॥
जिन्दा हूं मैं जब तक के हिलाना नहीं लब को ।
अफसोस है हमदम को तुम भुलाये हो ॥ गोकुल के० ॥

(सब का प्रस्थान)

प्रथम परिच्छेद (३ ड्राप १० सीन)

मल्ल अखाड़ा

(बल्देवजी व तेजसिंह सेना पती की वार्तालाप)

बल्देवजी--(सेनापति से) हां फिर क्या जवाब लाये ।

तेजसिंह--श्रीमहाराज महाराजा समुद्रविजय व राजा समन्तभद्र, राजा हिमवन, विजय चल, धारण, पूरण, सुवखा, अभिनन्दन, समस्त कुटम्बी जनों को सेवक ने आज के मल्ल युद्ध की सूचना दी, और पापी कन्श के भाव भी प्रकट करदिये, यादव वन्शी क्रोध को प्राप्त होकर बीस बीस हजार सेना सहित मेरे साथ मुथरा में आलिये हैं, पुष्पक नामा उद्यान में कटक ठहरा हुवा है कुछ समय में यहीं पर आने वाले है ।

बल्देवजी--आपने ये महान कार्य किया है । परन्तु

शेर—आज का मल्लयुद्ध समझो जान का जिंजाल है ।
कौन पाता है विजय किस किस के सर पर काल है ।
ग्वाल से मल्लयुद्ध करना कंश की ये चाल है ।
माया कटारी रोकने को धर्मरूपी ढाल है ॥

सफीर--श्रीमहाराज सावधान शाही किले के दरवाजे से दो खूनी हाथी कृष्ण महाराज पर छोड़ गये हैं । कृष्ण महाराज ने एकही मुष्टका

से हाथी को निरमद कर डाला। दांत उखाड़ कर प्राण रहित किया है। परन्तु दूसरे हाथी से गोकुल के ग्वालों को नुकसान पहुंचाने का भय है।

बलदेव--चलो उसको हम निरमद करते हैं। तेजसिंह तुम यहीं पर पधारो जो सैना हमारे पक्ष की हो उसको एक जगह बैठारो। और कन्श आदि की वार्तालाप से खबरदार हो।

तेजसिंह--श्रीमहाराज ऐसाही होगा। (बलदेव जी का प्रस्थान)

(चरण चारण मल्लों (पहलवानों) का अपनी२ तारीफ करते आना

गाना—गोकुलवालों को नीचा दिखायेंगे हम, मल्ल अखाड़े को मकतल बनायेंगे हम।

हुक्म है पोशीदा रक्खो खंजरे आवदार को।
छाती पै चढ़ कर कलेजे घूसदो तलवार को॥
फिरतो सीने पै खंजर चलायेंगे हम॥ गोकुल०॥
दुनियां में मशहूर हैं हम चरण चारण नाम है।
ग्वाल्यों से हमरी कुश्ती हा! शर्म्म का काम है॥
कीड़ी चींटी से जोर आजमायेंगे हम। गोकुल वालों को०॥
कोह को कर से उठाया पंक लाकर दंदिया।
ग्वाले को ताव क्या है शाह को बहका लिया॥
मजा मौत का उनको चखायेंगे हम॥ गोकुल वालों को०॥

द्वारपाल—सावधान श्रीमहाराज आते हैं।

कन्श का आना सब का सरनिवाना सिंहासनपर बैठना

द्वारपाल=श्रीमहाराज की विजय हो। शोरी पुरके महाराज समन्तभद्र आदि छहों भाई मल्ल युद्ध की शोभा देखने को पधारे हैं।

कन्श=सेनापती जावो। आदर पूर्वक लेकर आओ (जाना लेकर आना)

सोरीपुर वाले=(आना) जै! जैहो जिनेन्द्र देवकी जय हो।

कन्श—(खड़ा होकर) आइये! आइये! पधारिये! पधारिये!

सोरीपुर वाले—विराजिये २ आप सिंहासन परही विराजिये ।

कन्श—आपने वड़ा अनुग्रह किया ! जो मुझ तुच्छ वुद्ध को दर्शन दिया

महावत—श्रीमहाराज गजब हुवा ! खूनी हाथी मान रहित हुवा !

कन्श—क्या बकता है ।

महावत—श्रीमहाराज सेवक के वचन सत्य हैं । गोकुल के ग्वाल की वीरता प्रशंसा योग्य है । सुनिये ।

कवित्त—खाय मुष्टका पड़ा धरण पर बदन सभी थर्राया है ।
छाती पर जब चढ़ा वीर तब सांस मार कर्राया है ॥
दांत उखाड़ कर खींचे तब चिंहाड़ मार भर्राया है ।
मानो सिंह यम रूप धार गजराज मारने आया है ॥

कन्श—अच्छा जावो । सेना पति शीघ्र जावो गोकुल के ग्वालों को पकड़ कर लावो ।

सैनापती—श्री महाराज जो आज्ञा ।

(जाना कुछ समय में लेकर आना)

(बल्देवजी वसुदेवजी का भी आना)

कृष्ण—दोहा रक्षा हेतू ईश ने बना दिया भूपाल ।
खता हुई कहो कौन सी, पकड़ मंगाये ग्वाल ॥
राज द्रोही कज्जाक थे, या लूटा धन माल ।
सच सच अब मुझसे कहो, क्यों सर रखा वबाल ॥

लावनी—क्यों सर रखा बवाल यद्यपि तुझको शीश निवाते थे ।
जंगल में मंगल है इनका तुझको नहीं सताते थे ॥
सैनापति गोकुल में जा कोल्हू धमकी दिखलाते थे ।
गर कोई पूछे खता कसूर क्या ये कुछ नहीं बताते थे ॥

कंश—मुह जोरी तुझ में अधिक सर पर रक्खा मौड़ ।
सूली दिलवाऊं तुम्हें नहीं गोकुल दो छोड़ ॥
नाग धनुष को छत्री या या जीते भूपाल ।
साहस क्यों तूने किया तू गोकुल का ग्वाल ॥

क्षत्री के कारज करे नीच अधर्मी जान।
गोकुल में पाकर जनम सब के खोये भान॥

कृष्णामह राज— बिना दोष क्यों रोष है बनता है नादान।
धनुष बान जीते न क्यों खोई क्षत्री शान॥
दिया पंक का हुक्म क्यों लावें गोकुल ग्वाल।
वरना सब कोल्हू पिलें लूट लेवो धन माल॥
मानुष की ताकत कहां जायें कालिया पास।
चार २ योजन तलक भस्म होय जा घास॥
दीन दरिद्री जान कर ग्वालन मारन काज।
महावन से छुड़वा दिये खूनी हाथी आज॥
खूनी हाथी के मगर लाया दांत उखाड़।
मल्ल युद्ध के योधा डटो देऊं अभी पछाड़॥
गोकुल मेरी जान है और मैं गोकुल की जान।
अन्यायी पापी है तू लीना मैं पहचान॥

कंश—चरण। चारण। क्या देख रहे हो शत्रु की जान लो।

कृष्ण—शत्रु। शत्रु। क्या मैं तेरा शत्रु।

दोहा—फूटी आंख विवेक की स्वार्थ है जग अंध।
आपा आपा मानकर भूल रहा मति मंद॥
नहीं देखा दरबार ये नहीं देखा भूपाल।
जंगल में निश दिन रहा मैं गोकुल का ग्वाल॥
मैं कैसे शत्रु हुवा सुनत अचम्भो आन।
सूंत लई तलवार क्यों लेने को यह जान॥

वार्ता—राजन्। मुझको तूने कैसे शत्रु कहा।

दोहा

कंश—जादू से परवत उठा मोहा गोकुल ग्राम।
झूठा पंक दिखला मुझे करलिया अपना नाम॥
गोकुल का नहीं ग्वाल तू बाजी गर का पूत।
कला तेरी देखूं अभी जननी पूत कपूत॥

कृष्ण—मात पिता करे क़ैद मैं बेटा पूत कपूत ।
पिंजरा सुन मुख है टंगा नहीं कुछ और सबूत ॥
वन्दी ग्रह से जीव को मुक्ती करूं मुदाम ।
बंद रहित छिन में करूं खाना मुझे हराम ॥

वार्त—तू अपने मां बाप को बंधन से दे छोड़ ।
वरना बेड़ी पींजड़ा डालूंगा सब तोड़ ॥

कंश—तो क्या मेरे इंतज़ाम में खलल डालने का भी ध्यान है)

कृष्ण—हां । जबतक तुझको मात पिता से बदला लेने का अरमान है और सुन ।

कृष्ण गाना—तर्ज—तेरा अबरू हैं जुदा मुह पै हैं दो मार जुदा ।
जब से यह मैंने सुना क़ैद हुई है माता, दिल है बेचैन मेरा हरकत नहीं इसमें पाता ।

गाना-शेर—गोके राजा है तू रय्यत के हैं मां बाप यही ।
बेटे देखें भला मां बाप का संताप यही ॥
छोड़दे २ अब खायगा बस पाप यहीं ।
यम के द्वारों का समझ तुझको है अब ताप यही ॥
इनको कोदों तू दे हलवा बना पापी खाता । जब से यहमैने ॥०

शेर—मात पित जान ले तू दूसरे करतार यही ।
येही मालिक हैं तेरे जान ले भरतार यही ॥
सर को क़दमों पै निवा सरके हैं सरदार यही ।
वरना नरकों की दिखाने की हैं तलवार यही ॥
सोंवै यह टाट गंदीला तुझे मखमल भाता । जब से यह मैं० ॥

शेर—दया तुझको नही मां बाप के हा ! रोने की ।
सैकड़ों जन्म लों मुक्ती तुझे नहीं होनेकी ॥
मूढ़ है टेव मनुष जन्म वृथा खोने की ।
न्याय अन्याय लख कसौटी यही है सोने की ॥
संग दिल तेरा नहीं मोम ज़िगर में पाता ॥ जबसे० ॥

कन्श—गाना—दूर हो दूर नसीहत मुझे क्या करता है।
फैल बाजी से तेरी कौन बता डरता है॥
नीच पापी मेरे अब हाथ से क्यों मरता है।
किस के मां बाप हैं किसका तू दम भरता है॥
देखमन हर्ष भया मेरा मंझूखा जाता।
कौन है बाप मेरा किसको मैं समझूं माता॥
शेर—राज दर्बार है गोकुल के यहां ग्वाल नहीं।
बेअदब पापी क्या समझा तूने भूपाल नहीं॥
मार ऐसी मैं देऊं तन पै रहे खाल नहीं।
पाजी मुह जोर है गोकुल का भी तू ग्वाल नहीं॥
ठहर जा ठहर जा छिन में अभी सूली पाता। कौन है बाप मेरा किस० ॥ वार्ता और सुन।
शेर—बदला लेना जुल्म करना यही मेरा काम है।
लाशा तेरा भी टंगेगा कंश मेरा नाम है॥

कृष्ण—शेर—जुल्म तेरा हो चुका आखिर को मृत्यू जानले।
छोड़ दे मा बाप को यह तू वचन सच मान ले॥

कन्श—चरण क्या सोच रहा है। शत्रू को क्यों नहीं महस्थ करता।

चरण—(खम ठोंक कर) आ। आ अपना बल मुझे दिखा।

कृष्ण—(महाराज का ठोकर मार कर गिराना एक लात मार कर प्राण रहित करना लाश का तड़पना मल्ल युद्धों का एक दम हमला करके झपटना।

बलदेव—खबरदार! (गदा घुमा कर)
शेर- ग्वाल पर अन्याय करते हो तुम इकला जान कर।
क्या समझ हमला किया मारूं गदा को तान कर॥

कन्श—शेर—भानजा किसका है तूभी ग्वाल्यों के साथ है।
मरना जीना जो तेरा है वह भी मेरे हाथ है॥

बलदेवजी—हाथ कैसा भूल जा अब जंग का ऐलान है।
तख्त शाही छोड़दे संग्राम का मैदान है॥

लेके बचन धोका दिया यह दिल में मेरे खार है।
जुल्म जो तेरा है वह सीने से मेरे पार है॥
घर में परसूती की खुशी बच्चों को तूने मार कर।
भानजों को कब्र में तूने सुलाया प्यार कर॥

गाना—खूने जिगर से उठती है, एक शोला भरी आग।
ले ले के बचन निभाया, बच्चों को तूने खाया॥
तलवार मेरी खा सोता क्या है शत्रू मेरे जाग॥ खूने जिगर॥०
यह कृष्ण है मेरा भाई, मरने की जुगत चलाई।
प्राणों के देने की अब पापी लग रही तोको लाग॥ खूने०॥
हमें मृतक कह के बताया। पापी बेजुर्म सताया।
करे जुल्म जो तूने सीने पै वह लग रहे मेरे दाग॥ खूने०॥

कन्श—(क्रोध करके उठता है)

शेर—दाग दूंगा अब चिता में दोनों को एक साथ में।
फैसला करता हूं मैं तलवार के एक हाथ में॥

कंश का तलवार लेकर झपटना कृष्ण महाराज का तलवार छीन कर पांव पकड़ कर घुमाना। जमीन पर पटकना आवाज का होना। कंश का तड़पना। उग्रसेन व रानी का बन्दी ग्रह से मुक्त होना। कंश की सेना वह वीरदमन की सेना का तलवार चमकाना समुद्र बिजय आदि का भालों की नोकों से वार रोकना।

ड्राप सीन